यच्चक्षुषा न पश्यति येन चक्षू ्ँषि पश्यति।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते॥

जिसको कोई चक्षुओं के द्वारा नहीं देख सकता, प्रत्युत जिसकी शक्ति से चक्षु अपने विषयों को देख (जान) सकते हैं, उसको ही तू ब्रह्म जानह्नह्नजिसकी लोग यहाँ (इस लोक में) उपासना करते हैं, वह ब्रह्म नहीं है।

पूर्व-अंक का शेष :

कामावेग की कार्य-प्रणाली

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

कामुकता का उन्मूलन सरल कार्य नहीं है

आपको अपने हृदय के विभिन्न कोनों में छिपे हुए इस भयानक काम-शत्रु को सावधानीपूर्वक खोज निकालना होगा। जिस प्रकार लोमड़ी झाड़ी में छिपी रहती है, उसी प्रकार यह कामुकता मन के अधःस्तर तथा कोनों में छिपी रहती है। यदि आप जागरूक रहेंगे, तभी आप इसकी उपस्थिति का पता पा सकते हैं। गहन आत्म-परीक्षण परम आवश्यक है। जिस प्रकार शक्तिशाली शत्रुओं को आप तभी पराजित कर सकते हैं, जब आप उन पर सभी दिशाओं से आक्रमण करें; उसी प्रकार आप अपनी शक्तिशाली इन्द्रियों को तभी नियन्त्रण में रख सकते हैं, जब आप उन पर ऊपर-नीचे, अन्दर-बाहरह्ह्चारों ओर से आक्रमण करें।

इन्द्रियाँ बहुत ही उपद्रवी हैं। उपदंश उत्पन्न करने वाले शक्तिशाली संक्रमित विषाणु (वाइरस) पर चिकित्सक विलेपन, अन्तःक्षेपण (सुई), मिश्रण, चूर्ण आदि विविध युक्तियों से सभी दिशाओं से आक्रमण करता है। इसी प्रकार इन्द्रियों का निग्रह भी उपवास, आहार-संयम, प्राणायाम, जप, कीर्तन, ध्यान, विचार अथवा 'मैं कौन हूँ' की जिज्ञासा, प्रत्याहार, दम, आसन, बन्ध, मुद्रा, चित्तवृत्ति-निरोध, वासना-क्षय आदि विविध उपायों से करना चाहिए।

मात्र इस तथ्य के कारण कि आप कई वर्षों तक अविवाहित जीवन यापन कर चुके हैं अथवा आप किंचित् शान्ति अथवा शुद्धता का अनुभव कर रहे हैं, मूर्खतापूर्वक यह समझने की भूल न करें कि आप कामुकता से अपना पीछा छुड़ाने में सफल हो गये हैं। आप इस भ्रम के शिकार न बनें कि आपने आहार में किंचित् समायोजन, प्राणायाम के अभ्यास तथा स्वल्प जप के द्वारा काम-वासना का पूर्णतया उन्मूलन कर डाला है और अब करने को कुछ शेष नहीं रहा। प्रलोभन अथवा मार आपको किसी क्षण भी पराभूत कर सकता है। निरन्तर जागरूकता तथा कठोर साधना की परम आवश्यकता है। परिमित प्रयास से आप पूर्ण ब्रह्मचर्य को प्राप्त नहीं कर सकते हैं। जिस प्रकार एक शक्तिशाली शत्रु को मारने के लिए मशीनगन की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार इस शक्तिशाली शत्रु काम का विनाश करने के लिए सतत प्रबल तथा प्रभावशाली साधना आवश्यक है। ब्रह्मचर्य में अपनी थोड़ी-सी उपलब्धि से आप अभिमान से न फूलिए। यदि आपकी परीक्षा ली गयी, तो आप निराशाजनक रूप से असफल होंगे। अपनी त्रुटियों से सदा अभिज्ञ रहें तथा उनसे पीछा छुड़ाने के लिए सदा प्रयत्नशील रहें। सर्वोच्च प्रयास आवश्यक है। तभी आपको इस दिशा में प्रत्याशित सफलता प्राप्त होगी।

सिंह, व्याघ्र अथवा हाथी को पालतू बनाना सरल है, नाग के साथ क्रीड़ा करना भी सरल है, अग्नि के ऊपर चलना भी सरल है, हिमालय को उखाड़ लेना भी सरल है, युद्ध-क्षेत्र में विजय प्राप्त करना भी सरल है; किन्तु काम का उन्मूलन करना दुस्साध्य है। इस काम-शक्ति ने ही विकास की प्रारम्भिक अवस्थाओं से ले कर युग-युगान्तरों तक सन्तान-प्रजनन तथा बहुलीकरण की नैसर्गिक प्रवृत्ति को बनाये रखा। अतः इस शक्ति के नियन्त्रण तथा दमन के समस्त प्रयासों के होते हुए भी, यह

बलात् प्रकट होने तथा साधक को पराजित करने का प्रयास करती है।

तथापि इससे आपको किंचित् निराश नहीं होना चाहिए। ईश्वर, उनके नाम तथा उनकी कृपा में विश्वास रखें। प्रभु की कृपा के बिना मन से काम-वासना का पूर्णतया उन्मूलन करना सम्भव नहीं है। यदि आपकी ईश्वर में श्रद्धा है, तो आपको अवश्यमेव सफलता प्राप्त होगी। आप पल मात्र में ही काम को नष्ट कर सकते हैं। ईश्वर मूक व्यक्ति को वाचाल तथा पंगु को दुरारोह पर्वत पर आरोहण-योग्य बना देते हैं। मानव-प्रयास मात्र ही पर्याप्त नहीं है। भगवद्-कृपा की आवश्यकता है। ईश्वर उसकी सहायता करते हैं, जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं। यदि आप निःशेष आत्म-समर्पण कर दें, तो स्वयं प्रकृति माता आपकी साधना करेंगी।

पुराने संस्कार तथा वासनाएँ चाहे कितने ही बलशाली क्यों न हों, नियमित ध्यान तथा मन्त्र-जप, सात्त्विक आहार, सत्संग, प्राणायाम, शीर्षासन तथा सर्वांगासन का अभ्यास, स्वाध्याय, विचार तथा किसी पवित्र सरिता-तट पर तीन महीनों तक एकान्त-वास से पूर्णतः नष्ट हो जायेंगे। धनात्मक ऋणात्मक पर सदा विजयी होता है। जो भी हो, आपको हतोत्साहित नहीं होना चाहिए। ध्यान में गम्भीरतापूर्वक निमग्न हो जाइए, इस मार (काम) को मार डालिए तथा संग्राम में विजयी बनिए। वैभवशाली योगी के रूप में ख्याति प्राप्त कीजिए। आप नित्य-शुद्ध आत्मा हैं। हे विश्वराजन्! इसका अनुभव कीजिए।

कामावेगों को कठिनाई से नियन्त्रित किया जा सकता है। जब आप कामावेगों को नियन्त्रित करने का प्रयत्न करते हैं, तो वे विद्रोह कर बैठते हैं। काम-शक्ति को आध्यात्मिक पथ पर निर्दिष्ट करने के लिए दीर्घ काल तक निरन्तर जप तथा ध्यान की आवश्यकता है। काम-शक्ति का ओज-शक्ति में पूर्ण उदात्तीकरण आवश्यक है। तभी आप पूर्णतः सुरक्षित रह पायेंगे। तभी आप समाधि में प्रतिष्ठित होंगे, क्योंकि तब रसास्वाद पूर्णतः लुप्त हो जायेगा। कामावेगों के उन्मूलन तथा विचार, वाणी तथा कर्म में पूर्ण शुद्धता की प्राप्ति के लिए परम धैर्य, निरन्तर जागरूकता, अध्यवसाय तथा कठोर साधना की आवश्यकता है।

ब्रह्मचर्य केवल निरन्तर प्रयास द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। यह एक दिन या एक सप्ताह में उपलब्ध नहीं किया जा सकता है। काम-वासना निश्चय ही बहुत शक्तिशाली है। यह आपकी प्राणान्तक शत्रु है। किन्तु आपका परम शक्तिशाली मित्र भगवन्नाम है। यह काम-वासना को आमूल नष्ट कर डालता है। अतः सदा जप तथा कीर्तन करें : ''राम, राम, राम।''

योगाभ्यास, ध्यान इत्यादि काम-वासना को अत्यधिक मात्रा में क्षीण कर देंगे; किन्तु एकमात्र आत्म-साक्षात्कार ही काम-वासना तथा संस्कारों को पूर्णतया नष्ट तथा विदग्ध कर सकता है। भगवद्गीता ने ठीक ही कहा है : ''संयमी (इन्द्रियों द्वारा विषयों को न ग्रहण करने वाले) व्यक्ति के इन्द्रिय-विषय तो निवृत्त हो जाते हैं; पर राग निवृत्त नहीं होता। किन्तु यह राग भी व्यक्ति के आत्म-साक्षात्कार करने के पश्चात् निवृत्त हो जाता है।''

काम की सहज प्रवृत्ति एक सर्जनात्मक शक्ति है। यदि आप आध्यात्मिक आदर्शों से प्रेरित नहीं हैं, तो नैसर्गिक काम-प्रवृत्ति का निरोध कठिन है। काम-शक्ति को उच्चतर आध्यात्मिक पथ में निर्दिष्ट कीजिए। इसका उदात्तीकरण होगा। यह दिव्य शक्ति में रूपान्तरित हो जायेगी। तथापि काम का पूर्ण उन्मूलन व्यक्तिगत प्रयास से नहीं हो सकता है। यह केवल भगवद्-कृपा से ही निष्पन्न हो सकता है। **(समाप्त) (अनूदित)**

ज्ञान, ध्यान और अपने जीवन का आध्यात्मीकरण

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

जीवन का परम लक्ष्य ब्रह्मज्ञान घोषित किया गया है, उस परा ज्ञान की प्राप्ति करना कहा गया है जो प्रबोधन और प्रकाश ला कर जीव को मुक्त कर देता है, उसे पुन: दु:खों और मृत्यु के इस संसार में नहीं आना पड़ता, वह जन्म-मरण के इस अन्तहीन चक्र से छूट जाता है।

केवल ज्ञान के द्वारा, आत्म-साक्षात्कार, आत्म-ज्ञान, ब्रह्मज्ञान के द्वारा ही मोक्ष सम्भव है; कर्मकाण्ड, धार्मिक अनुष्ठानों के द्वारा नहीं, बाह्य विधानों के द्वारा, तीर्थाटन, व्रत-उपवासों, दान-स्नान के द्वारा यह सम्भव नहीं है। यह सब करना अच्छा है; किन्तु फिर भी भले ही आप शत नहीं, सहस्र शत जन्मों तक भी इन पवित्र धार्मिक पुण्य कर्मों में लगे रहें, लेकिन जब तक प्रबोधन अथवा ज्ञान की प्राप्ति नहीं कर लेते, तब तक मोक्ष नहीं हो सकता।

इन शुभ कर्मों में लगना इसलिए अच्छा है कि आप अशुभ कर्मों के जाल में न फँस जायें। इनका यही महत्त्व है कि यह हमें सही दिशा की ओर चलने में लगा कर पतन की ओर जाने से बचाये रखते हैं। किन्तु जब तक आत्म-बोध प्राप्त नहीं हुआ है, जब तक व्यक्ति उस ज्ञान से प्रबुद्ध नहीं हुआ है, जो अन्य सब विद्याओं से परे है, जिसे प्राप्त कर लेने पर उसे जन्म-मरण के दु:खों से पूर्ण इस संसार में पुन: नहीं आना पड़ता, जिसे पा कर अन्य सब-कुछ जाना जाता है, तब तक उसे संसार-सागर को पार कर लेने वाले एकमात्र और सुरक्षित जहाज की प्राप्ति नहीं हुई है।

अत: ज्ञान का सर्वोच्च महत्त्व यह है। वेदान्त का अर्थ ज्ञान है। ज्ञान अत्यन्त शुद्धिकारक है। ज्ञान प्राप्त कर लेने से पूर्व-जन्म कृत समस्त कर्म भस्मीभूत हो जाते हैं। व्यक्ति तत्क्षण वहीं मुक्त हो जाता है। किन्तु अन्तत: इस प्रबोधन को लाने के लिए एकमात्र साधनह्नह्नगहन ध्यान है। इस प्रबोधन को भले ही किसी भी ढंग से अभिव्यक्त करें, ध्यान परमानन्द-प्राप्ति के लिए अन्तिम प्रवेश-द्वार है, मुख्य-द्वार है।

समस्त योगों की चरम परिणति ध्यान में ही होती है। चाहे वह जपयोग हो, कीर्तनयोग हो, कुण्डलिनीयोग हो; कर्म, भक्ति, ध्यान अथवा ज्ञानयोग होह्नह्नइन सभी योगों के समस्त अंगों की परिणति ध्यान में ही होती है तथा ध्यान के द्वारा, केवल ध्यान में ही प्रबोधन की प्राप्ति होती है। उसमें भले ही 'ध्यान' शब्द का प्रयोग न किया गया हो; किन्तु सभी योगों के वर्णन में गहन ध्यान का उल्लेख किया गया है। नवधा भक्ति के नौ अंगों में ध्यान का उल्लेख हुआ प्रतीत नहीं होता; किन्तु आत्म-निवेदन (पूर्ण आत्म-समर्पण) अन्य कुछ और न हो कर वही हैह्नह्नस्वयं को शून्य बना देना, गहन भक्ति के द्वारा ध्यानावस्था में स्वयं को पूर्णतया खो देना। इसका भाव ध्यान से ही है।

इसलिए आध्यात्मिक जीवन में परम तत्त्व की प्राप्ति के लिए ज्ञान और ध्यान अपरिहार्य आवश्यकताएँ हैं। किन्तु फिर भी जब तक हमें अपने शरीर का बोध है, जब तक हम देह-बोध की अवस्था में हैं, तब तक व्यावहारिक सत्य ही सत्य है। अत: जब तक हम इस जगत् में हैं, लोगों के बीच में हैं, कार्य-व्यापारों में लगे हुए हैं, भिन्न-भिन्न लोगों से सम्बन्ध बनाये हुए हैंह्नह्नक्रिया-प्रतिक्रियाओं में संलग्न हैंह्नह्नतब तक आवश्यकतानुसार व्यवहार करने से

बच नहीं सकते। इसलिए बहुत हद तक यह सम्भावना बनी रहती है कि हम अपने जीवन के लक्ष्य को भूल जायें, कि हम वास्तव में कौन हैं और अज्ञान की, अविवेक और अविचार की अवस्था में गिर सकते हैं, उसमें फँस सकते हैं।

हम दिन के चौबीस घण्टों में ज्ञान अथवा ध्यान की अवस्था में नहीं रह सकते, यह जानते हुए, और यह भी जानते हुए कि प्रकृति के नियमानुसार हमें विवशतया किसी-न-किसी कर्म में लगे ही रहना पड़ता हैह्लह्लहमारे धर्मग्रन्थ क्या कहते हैं? अपने जीवन को दिव्य बनायें! अपनी समस्त गतिविधियों का आध्यात्मीकरण करें और अपने व्यक्तित्व को ईश्वरीय-चेतना की अवस्था में बनाये रखें। स्वयं की, अपने दिव्य आत्म-स्वरूप के साथ पहचान बना कर रखें और इस जागरूकता में निवास करते हुए जियें कि मेरे इस देह-मन्दिर में भगवान् निवास करते हैं। और अपने अन्त:स्थित भगवान् की परम परिपूर्णता आपके समस्त कार्य-व्यवहारों द्वारा अभिव्यक्त होनी चाहिए।

'दिव्यता' एक 'संकेत-शब्द' है। मनुष्य की भगवान् के विषय में क्या अवधारणा है? वह दया का सागर है। इसलिए ज्ञान और ध्यान को सफल बनाने वाली एक साधना हैह्लह्लदयालु बनना, करुणामय होना, क्षमा-शील, उदार होना, दूसरों के प्रति सहानुभूति रखना, भला बनना और भलाई करना। अपने मानवीय स्तर पर रह कर कार्य न करें, प्रत्युत अपनी दिव्यता के स्तर से कार्यशील हों; क्योंकि आपका मानवीय व्यक्तित्व तो केवल कुछ ही देर के लिए है, अस्थाई है।

आपकी दिव्यता ही आपका वास्तविक स्वरूप है। इसी को जाग्रत होने दें। वह सब-कुछ, जो ईश्वरीय है, जो सुन्दर है, उदात्त है और दिव्य है, उसका स्वयं को केन्द्रीय तत्त्व बनायें। अन्य सबके सुख-दु:ख में अपना सुख-दु:ख अनुभव करें। सहानुभूतिशील बनें। किसी पर दु:ख आने पर तत्काल करुणा के देवता बन कर कार्यरत हो जायें। करुणा, शान्ति और आनन्द प्रसारित करने वाले उपकरण बन जायें। अपने जीवन में, अपने जीवन के द्वारा ईश्वरीय प्रेम, दया, करुणा और सहानुभूति प्रसारित करने का माध्यम बन कर रहें।

यही एक करने योग्य कार्य है। केवल एक यही कार्य आपके ज्ञान और ध्यान को सफल बना कर, आपको मोक्ष दिलाने में सक्षम है। इसी की ओर संकेत करते हुए भगवान् श्री कृष्ण ने गीता के १२ वें अध्याय के अन्तिम अर्ध भाग में बताया है कि उन्हें सर्वाधिक प्रिय कैसे लोग हैं। भले ही आपने कितने भी दर्शन-ग्रन्थों का अध्ययन कर लिया हो और भले ही आप घण्टों तक ध्यान में बैठ सकते हों; किन्तु यदि आपका हृदय दूसरों के प्रति दया और करुणा से पूर्ण नहीं है, तो आपको अन्य चाहे सब-कुछ प्राप्त हो जाये, किन्तु प्रबोधन और मोक्ष प्राप्त होना असम्भव है।

इसलिए अब, जब कि हम नये दिवस का प्रारम्भ करने जा रहे हैं, हम इस महान् सत्य पर गहराई से मनन करें। केवल ज्ञान और ध्यान के द्वारा ही व्यक्ति प्रबुद्ध और मुक्त नहीं हो जाता, प्रत्युत स्नेहपूर्ण दया से, सबके भले की कामना से तथा सबका भला करने वाले कार्यों में लग जाने से ही होता है।

अध्यात्मीकृत जीवन के इस उर्वर (उपजाऊ) क्षेत्र में ही ज्ञान और ध्यान में प्रबोधन और मुक्ति के फल प्राप्त होते हैं, अन्यत्र कहीं नहीं। हम सब इस सत्य को समझें और विनम्रतापूर्वक स्वयं को ईश्वरत्व, दया, करुणा और भलाई का केन्द्र बनायें। यही करना अत्यावश्यक है।

(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)

सुषुप्ति और प्रज्ञा

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

जीव के दृष्टिकोण से जाग्रतावस्था और स्वप्नावस्था मन के कार्य-सम्पादन के दो स्थान हैं। जागृति और स्वप्न दोनों में अनुभव बोध लेने के लिए मन अपना विस्तार करता है। मन क्रियाशील है और सतत क्रिया करते-करते श्रान्त हो जाता है। अत्यधिक श्रान्ति की अवस्था में मन कार्य को विराम देता है। कर्म की पूर्ण विरति (विराम) की अवस्था सुषुप्ति की अवस्था कहलाती है।

'न कंचन कामं कामयते'ह्ह्जिस अवस्था में पुरुष किसी भोग की इच्छा नहीं करता, वह सुषुप्ति कहलाती है। इस अवस्था में मन स्थूल और सूक्ष्म, दोनों प्रकार के विषयों से संहृत हो जाता है। **'न कंचन स्वप्नं पश्यति'**ह्ह्वह कोई स्वप्न भी नहीं देखता; क्योंकि मन की चेष्टाएँ भी शान्त हो चुकी हैं। **'तत् सुषुप्तम्'**ह्ह्यही सुषुप्ति है। मन का पूर्ण रूप से अपने में संहरण! किन्तु यह संहरण अचेतन प्रकृति का है।

स्वप्न में मन किंचित् चेतना से युक्त रहता है और जागृति में पूर्ण चैतन्य होता है; परन्तु सुषुप्ति में सर्वथा अचेत रहता है। इस तथ्य से एक त्रुटिपूर्ण दार्शनिक विचारधारा का उद्भव हुआ जिसके अनुसार मन का इन्द्रिय-विषयों से संयोग होने पर ही चेतना सम्भव है। न्याय और वैशेषिक इसी विचारधारा के दर्शन हैं। उनके अनुसार जब तक आत्मा का विषयों के साथ संयोग न हो, ज्ञान सम्भव नहीं है। न्याय-वैशेषिक मतानुसार आत्मा का वास्तविक स्वरूप, जब यह विषय-संयोग से परे हो, ज्ञानस्वरूप नहीं है। उनका मत यथार्थ नहीं है; क्योंकि वे यह नहीं बता सकते कि यह अचेतन तत्त्व मन्दगति से सुषुप्ति की अवस्था को कैसे प्राप्त होता है। कारण केवल इतना ही नहीं है कि चेतना का विषयों के साथ सम्पर्क नहीं है, प्रत्युत यह भी है कि गहन सुषुप्ति में ज्ञान के प्रकाश हेतु अन्य अवरोध भी हैं।

आत्मा का तीसरा पाद और विश्लेषण का तीसरा पक्ष है सुषुप्ति, जिसमें सब प्रकार के अनुभव और बोध का सन्निपात मन की एक ही वृत्ति में होता हैह्ह**'एकीभूतः'** । यह चेतना का विशाल पुंज-सा बन जाता है जिसका विस्तार बाहर की ओर नहीं होताह्ह**'प्रज्ञानघनः'** है यह अवस्था। इस अवस्था में कोई मनोविकार नहीं होता, अतः बाह्य चेतना भी नहीं होती। मनोवृत्ति और मनोविकारों के अभाव में सुषुप्ति की अवस्था में हम बाह्य जगत् के प्रति जागरूक नहीं होते। मन जब बहिष्प्रज्ञ होता है, तभी चेतना बाह्य जगत् से सम्पर्क करती है वह स्वप्न में हो अथवा जागृति में। किन्तु सुषुप्ति में मन का इस प्रकार का कोई स्फुरण अथवा उद्वेग नहीं होता। इस अवस्था में अनेक बोधपरक मनोविकारों की अपेक्षा प्रतीतियों का एक समाहित पुंज-सा होता है जिसमें सम्पूर्ण संस्कार और वासनाएँ एकीभूत हो जाते हैं।

'आनन्दमयो आनन्दभुक् चेतोमुखः प्राज्ञः'ह्ह्यह आनन्द की अवस्था है। इन्द्रिय-संयोग

से उदित सुखों की अपेक्षा गहन सुषुप्ति कहीं अधिक सुखद है। यह आनन्द, उल्लास और सन्तोष से परिपूर्ण अवस्था है। सप्ताह-भर नींद न लेने पर कोई इतना सुखी नहीं हो सकता। समस्त लोकों का साम्राज्य आपको दिया जाये और आपको निद्रा लेने की आज्ञा न हो, तो आप भी कहेंगेह्नह्न''मुझे सोने दो। मुझे आपका साम्राज्य नहीं चाहिए, वापस ले लो इसे और मुझे शान्तिपूर्वक सोने दो।'' कोई साम्राज्य आपको वह सुख प्रदान नहीं कर सकता और कोई शक्ति आपको वह सन्तोष नहीं दे सकती जो सुख और सन्तोष आपको गहन निद्रा में एकाकी, असहाय, असुरक्षित, अदृष्ट, अचेत और किसी भी वस्तु से अनधिकृत अवस्था में प्राप्त होते हैं।

भौतिक जगत् की अगणित वस्तुएँ जब आपके अधिकार में होती हैं, आपके पास आपके परिजन, भृत्य वर्ग आदि होते हैं, समाज में आपके प्रभुत्व का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगत होता है और आपके पास होता है एक सन्तोष का आभास। पुनरपि, इस सन्तोष की तुलना उस सुषुप्ति से प्राप्त सुख से नहीं की जा सकती जहाँ न आपका राज्य है, न आपके परिजन हैं, न कोई विचारणीय प्रभुत्व है और न ही आपको कोई देखने वाला है। उस एकाकी अवस्था में आप अधिक सुख का अनुभव करते हैं अपेक्षाकृत उस अवस्था के, जब आप जाग्रति में हों और परिजनों आदि के मध्य में हों। अपनी अवस्था की किंचित् कल्पना तो कीजिए।

आप जब एकाकी हैं, अकेले हैं और बहुत प्रसन्न हैं, प्रमुदित हैं; किन्तु जब आप असंख्य लोगों के मध्य होते हैं, तो आप विक्षुब्ध होते हैं, प्रकुपित होते हैं, चिन्ताग्रस्त होते हैं और अनेक प्रकार के परिवादों (शिकायतों) से अभिभूत रहते हैं। सुषुप्ति में आप कोई परिवाद नहीं करते, कोई कामना नहीं करते। आश्चर्य! देखो, तो! आप गहन निद्रा में हैं तो आपकी कोई कामना नहीं, कोई माँग नहीं, आप यह भी नहीं चाहते कि उस अवस्था में आपको कोई देखे अथवा आपसे बात करे और तब भी आप अधिक सुख का अनुभव करते हैं अपेक्षाकृत उस अवस्था के, जब आप राजसिंहासन पर थे। कहाँ से आया यह सुख? यह आनन्दमयत्व आपके पास कहाँ से आया? यही विषय इस मन्त्र का है जो आत्मा के तृतीय पाद का वर्णन कर रहा है। आपकी वास्तविक प्रकृति एकाकीपन (aloneness) है, संसर्गशीलता (sociability) नहीं। आपकी वास्तविक, प्रकृति केवलता है, विषयों के साथ इन्द्रिय-संयोग नहीं है। आपकी वास्तविक प्रकृति अद्वितीयता अर्थात् एकत्व (singularity) है, अनेकत्व (multiplicity) नहीं है। आपकी वास्तविक प्रकृति प्रपंच की सत्ता से पृथक् समग्रता की है, सर्वातिरिक्तता (transcendence) की है, विषय-संसर्ग की नहीं। इसीलिए आप आनन्दमय हैं, आनन्दभुक् हैंह्नह्नआनन्द का भोग करने वाले हैं।

(क्रमशः) (अनुवादिका : श्रीमती गुलशन सचदेव)

साधु वही है जो अपनी इस प्रतिज्ञा को व्यवहार में लाता हैह्नह्नमैं सारे प्राणियों के प्रति बन्धुत्व-भाव रखूँगा। मुझसे किसी को भय नहीं हो सकता। मैं सबसे प्रेम करता हूँ। मुझसे सबका हित होगा। विश्व-प्रेम मेरे जीवन का मूल-मन्त्र है। अन्धकार में फँसे लोगों के प्रति मेरा एक दायित्व है और इस दायित्व का निर्वाह करना मेरा सौभाग्य है। **स्वामी चिदानन्द**

बच्चों के लिए दिव्य जीवन :

सन्त और योगी ३

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

प्रभु ईसामसीह

प्रभु ईसामसीह ईसाई-धर्म के प्रवर्तक थे। वे एक महान् योगी थे। वे पैगम्बर थे, ईश्वर का सन्देश फैलाने वाले थे। उन्होंने अनेक चमत्कार किये। गरीबों और कोढ़ियों की सेवा की। कुमारी मरियम उनकी माता थी।

भगवान् बुद्ध बौद्ध-धर्म के प्रवर्तक थे और वे भी पैगम्बर थे। वे बड़े कृपालु थे। वे एक राजकुमार थे।

मुहम्मद रसूल इस्लाम-धर्म के प्रवर्तक थे। वे भी नबी थे।

सभी धर्म एक हैं। किसी धर्म से द्वेष न करो। सब धर्मों से प्रेम करो। प्रत्येक धर्म अच्छा है। सब धर्म ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग बताते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास

गोस्वामी तुलसीदास श्री रामचन्द्र जी के महान् भक्त थे। अपनी प्रगाढ़ भक्ति के कारण उन्होंने श्री राम का प्रत्यक्ष दर्शन किया था। वे अपनी पत्नी पर बहुत आसक्त थे। उनकी पत्नी ही उनकी गुरु बनी।

उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले में राजापुर नामक गाँव में सन् १५८९ में तुलसीदास का जन्म हुआ। जन्म से वे ब्राह्मण थे। पैदा होते समय उनके मुँह में बत्तीसों दाँत थे। जन्म के समय वे रोये नहीं थे।

गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'श्रीरामचरितमानस' (रामायण) हिन्दी-संसार में एक अनोखी कृति है। उत्तर प्रदेश में यह ग्रन्थ बहुत लोकप्रिय है। सारे उत्तर भारत में लोग इसे बड़ी श्रद्धा से पढ़ते हैं।

रामायण का पाठ नित्य-प्रति करो। कुछ चौपाइयाँ कण्ठस्थ कर लो और गाओ।

अजामिल

अजामिल एक श्रद्धालु ब्राह्मण थे। वह रोज ईश्वर की पूजा करते थे। वह सबके प्रति दयालु थे। अपने काम में वह बड़े नियमित थे। वह एकादशी के दिन उपवास करते थे। वह एक आदर्श मनुष्य थे। भगवान् नारायण के वह भक्त थे। प्रार्थना-पूजा आदि वह नियमित रूप से करते थे।

एक दिन वह जंगल में गये। वहाँ उन्हें एक सुन्दर स्त्री मिली। उस पर वह मोहित हो गये। उससे विवाह कर लिया और तबसे ईश्वर का भजन-कीर्तन उन्होंने छोड़ दिया। वह पत्नी के प्रेम में डूब गये। उनके आठ पुत्र पैदा हुए। अब वह नास्तिक बन गये।

मृत्यु-काल में उन्हें यमदूत दिखायी दिये। वह डर गये। जोर-जोर से चिल्लाने लगे। अपने छोटे लड़के नारायण को अपनी सहायता के लिए पुकारने लगे। नारायण का नाम सुनते ही भगवान् विष्णु के सेवक आ गये और यमदूतों को भगा कर उन्हें वैकुण्ठ ले गये।

सर्वदा नारायण का नाम लो। अजामिल ने जान-बूझ कर नारायण का नाम नहीं लिया, फिर भी भगवान् के आनन्द-धाम पहुँच गया। तुम श्रद्धा और भक्ति के साथ ईश्वर का नाम लोगे, तो कितना लाभ होगा!

पुरन्दरदास

पुरन्दरदास नामक एक ब्राह्मण थे। वह बड़े कंजूस थे। भगवान् कृष्ण ने उनके लोभ की परीक्षा लेनी चाही। वह एक भिखारी के रूप में आये और ब्राह्मण से भिक्षा माँगी। ब्राह्मण ने कुछ भी देने से इनकार कर दिया और दूसरे दिन आने को कहा। भिखारी दूसरे दिन भी आया। उस दिन भी ब्राह्मण ने भिखारी को दूसरे दिन आने को कहा। भिखारी महीनों तक इसी तरह प्रतिदिन आता रहा।

अन्त में एक दिन ब्राह्मण को बड़ा क्रोध आया और उसने एक पैसा उठा कर भिखारी के मुँह पर फेंक दिया। भिखारी ने पैसा छोड़ दिया और ब्राह्मण के घर के पिछवाड़े गया। ब्राह्मण की पत्नी ने अपनी नाक से नथ उतार कर उसे भिक्षा में दे दी। भिखारी वह नथ उसी ब्राह्मण के हाथ बेच कर पैसा ले कर चलता बना।

ब्राह्मण को पत्नी पर बड़ा क्रोध आया। पूछाह्नह्न''तुम्हारी नथ कहाँ है?'' उसने कहाह्नह्न''अभी मैं अन्दर से लाती हूँ।'' पत्नी भय के कारण विष खा लेना चाहती थी, लेकिन नथ अपने स्थान पर रखी हुई उसे दिखायी पड़ी। नथ को उसने पति के हाथ में रख दिया। पति को बड़ा आश्चर्य हुआ। तबसे वह सन्त और भगवान् का भक्त बन गया।

सन्तों की जीवनियों का अध्ययन करो

सन्तों का जीवन-चरित्र पढ़ने से तुम्हें ज्ञान मिलेगा। तुम भले बनोगे। तुममें सद्गुण विकसित होंगे। तुम ईश्वर का प्रत्यक्ष दर्शन करोगे।

तुकाराम, ज्ञानदेव, एकनाथ और रामदासह्नह्नये सब महाराष्ट्र के महान् सन्त थे। गौरांग महाप्रभु बंगाल के बड़े सन्त थे।

मीराबाई, सखुबाईह्नह्नये महिलाएँ महान् सन्त थीं। गुरुनानक, कबीर, नरसी मेहता, तुलसीदास भी बहुत बड़े सन्त थे।

सन्त जोसेफ, सन्त फ्रांसिस सन्त पैट्रिक महान् ईसाई सन्त थे। ये सारे सन्त तुम्हारा कल्याण करें!

(अनुवादक : श्री त्रि. न. आत्रेय)

जो साधक वैराग्य या तप के नाम पर विषयों से तो इन्द्रियों को हटा लेता है; परन्तु मन से किसी-न-किसी रूप में उनका चिन्तन करता रहता है, उसके सभी प्रयत्न निष्फल रह जाते हैं। उसे सफलता नहीं मिलती। पति पत्नी से दूर हो, परन्तु उसका चिन्तन करता रहे; माँ पुत्र से दूर हो, परन्तु उसका मन पुत्र के विषय में सोचता रहे तो सन्मार्ग में ऐसे आचरण से कोई लाभ नहीं है। स्थूल रूप में सम्पर्क रखने की अपेक्षा आप मन में किसका चिन्तन कर रहे हैं, यह अधिक महत्त्व रखता है।

स्वामी कृष्णानन्द

योग द्वारा स्वास्थ्य :

योग-मुद्रा

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

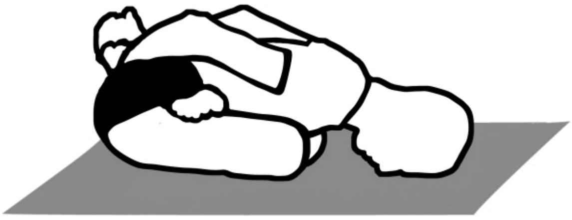

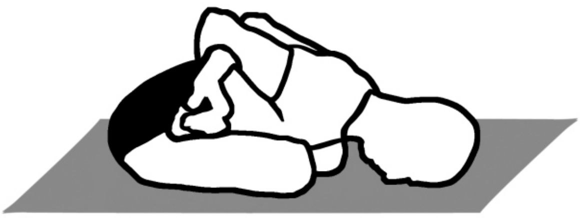

विधि

तह किये हुए कम्बल पर बैठ जायें। दायें पैर को बायीं जंघा पर और बायें पैर को दाहिनी जंघा पर रख कर पैरों की कैंची बना लें। इसे दूसरे शब्दों में कहें, तो पद्मासन धारण कर लें। शिर तथा मेरुदण्ड को सीधा रखते हुए हाथों को पीछे ले जायें और धड़ के पीछे बायें हाथ से दाहिनी कलाई को पकड़ लें। निःश्वास छोड़ें और आगे की ओर धीरे-धीरे इतना झुकें कि मस्तक भूमि को स्पर्श करे। अन्त:श्वसन के बिना अथवा सामान्य श्वसन के साथ (जो आपको सुखद लगे) प्रारम्भ में दश सेकण्ड तक इस आसन में रहें। मस्तक, उदर तथा पृष्ठ-भाग की मांसपेशियों पर चित्त एकाग्र करें। तत्पश्चात् बैठने की सीधी स्थिति में धीरे-धीरे वापस आ जायें और हाथों को खोल दें। सामान्य श्वास-प्रश्वास के साथ कालावधि को पाँच से छह मिनट तक शनैः-शनैः बढ़ायें।

रूपान्तर : आप कलाई को पकड़ने के स्थान पर पैर की उँगलियों कोह्नह्नदाहिने हाथ से दायें पैर की उँगलियों को तथा बायें हाथ से बायें पैर की उँगलियों कोह्नह्नपकड़ सकते हैं जैसा कि चित्र में प्रदर्शित किया गया है।

लाभ

यह उदर के विकार को दूर करता तथा उदर के स्रावी अवयवों को बलवान् बनाता है। यह क्रमाकुंचक क्रियाशीलता को तीव्र करता, कोष्ठबद्धता का निवारण करता तथा पाचन-शक्ति को उद्दीप्त भी करता है। यह आसन कुण्डलिनी-शक्ति को जगाने में भी सहायक होता है। **(अनुवादक : श्री शिवगोविन्द गुप्त)**

यदि आपका भाव ईश्वर-पूजन का है और आपका काम उसके नाम के साथ जुड़ा है, तो आपका प्रत्येक काम भजन बन जायेगा। स्थान चाहे घर हो, खेत अथवा जंगल हो, वह प्रभु का मन्दिर बन जायेगा। आप जहाँ भी चलेंगे, वह ईश्वर की ही प्रदक्षिणा होगी। **स्वामी चिदानन्द**

बाल-स्तम्भ

प्रायश्चित

स्वामी रामराज्यम्

बच्चो, यदि अपने द्वारा किये हुए अपराध का बोध हो जाये, उस अपराध को करने के कारण मन में दु:ख हो और मन में उस अपराध का दण्ड भुगतने की या स्वयं को ही उस अपराध का दण्ड देने की इच्छा उत्पन्न हो जाये, तो यह अच्छा जीवन जीने का लक्षण है।

अपराध होने पर उसका दण्ड हम अपनी इच्छा से प्राप्त करें, इसको उस अपराध का प्रायश्चित करना कहते हैं।

अपराध करके हम दूसरों की ही नहीं, अपनी भी हानि करते हैं। अपराध करने के कारण हमारा मन अशान्त हो जाता है। प्रायश्चित करके हम अपनी अशान्ति से मुक्त हो जाते हैं।

हम तुम्हें प्रायश्चित करने की एक प्रेरक घटना बतला रहे हैं ताकि यदि तुमसे कोई अपराध हो जाये, तो तुम उसका प्रायश्चित करने से न हिचको।

कुमारिल भट्ट ने कई वर्षों तक काशी में रह कर धर्मग्रन्थों का अध्ययन किया था। अध्ययन समाप्त करके वह बौद्ध-धर्म का अध्ययन करने के लिए तक्षशिला चले गये। तक्षशिला में अपना अध्ययन पूरा करने के बाद एक दिन वह अपने आचार्य के पास धर्म के विषय में चर्चा करने गये। चर्चा का विषय थाह्नह्नईश्वर का अस्तित्व है कि नहीं? उन दिनों इस प्रकार की चर्चाओं की धूम थी और उन्हें शास्त्रार्थ का नाम दिया जाता था। जिन दो व्यक्तियों के बीच शास्त्रार्थ होता था, वे अपनी-अपनी बात कहते थे। किसकी बात ठीक है, किसकी गलतह्नह्नइसका निर्णय एक तीसरा व्यक्ति करता था।

यह शास्त्रार्थ हुआ मगध-सम्राट् सुधन्वा के राजदरबार में। सुधन्वा को ही यह निर्णय देना था कि कुमारिल की बात ठीक है कि उसके आचार्य की बात। कुमारिल ने जोर देते हुए कहा कि ईश्वर का अस्तित्व है। उनके आचार्य का कहना था कि ईश्वर का अस्तित्व नहीं है।

सुधन्वा ने घोषित किया कि कुमारिल विजयी हुए। तब उनके पराजित आचार्य ने कहा कि यदि कुमारिल मानते हैं कि ईश्वर का अस्तित्व है, तो उन्हें इसका प्रमाण देना होगा। यह निर्णय किया गया कि कुमारिल एक पर्वत के शिखर से कूदेंगे और यदि ईश्वर का अस्तित्व है, वह उन्हें अवश्य बचा लेंगे। कुमारिल को ईश्वर के अस्तित्व पर दृढ़ विश्वास था। यह निर्णय सुन कर वह तनिक भी भयभीत नहीं हुए। वह पर्वत के शिखर से कूद पड़े। ईश्वर का अस्तित्व तो है ही। ईश्वर ने उन्हें बचा लिया।

कुमारिल को विजयी घोषित किया गया। उनके आचार्य हार गये।

अपनी विजय पर कुमारिल प्रसन्न नहीं थे। उनका मन पीड़ा से भर गया था। वह अपने इस अपराध को

भूल नहीं पा रहे थे कि उन्होंने अपने ही आचार्य को पराजित कर दिया और इस प्रकार उन्होंने उनका अपमान कर दिया। वह उनके पास गये और उनसे अपने मन की पीड़ा और अपनी ग्लानि की बात कही। आचार्य ने उन्हें क्षमा कर दिया। इसके बाद भी कुमारिल यह कहते रहेह्नह्नमुझे क्षमा मिल गयी; लेकिन अपराध का दण्ड कहाँ मिला!

''ठीक है, मैं स्वयं अपने को दण्ड दूँगा,'' उन्होंने अपने से कहा। वह प्रयागराज के संगम पर गये। वहाँ उन्होंने अन्न की भूसी इकट्ठी की। फिर उसमें आग लगा दी और उस आग में प्रवेश कर गये।

यह आग बहुत धीरे-धीरे बुझती है। जब तक यह आग बुझी नहीं, आग में पड़ा हुआ कुमारिल का शरीर आग के ताप की भयंकर यन्त्रणा झेलता रहा। और, यह यन्त्रणा झेलते हुए ही कुमारिल ने अन्तिम साँस ली।

कैसा असाधारण प्रायश्चित था!

विश्व-प्रार्थना

हे स्नेह और करुणा के आराध्य देव!
तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है।
तुम सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ हो।
तुम सच्चिदानन्दघन हो।
तुम सबके अन्तर्वासी हो।

हमें उदारता, समदर्शिता और मन का समत्व प्रदान करो।
श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृतार्थ करो।
हमें आध्यात्मिक अन्त:शक्ति का वर दो,
जिससे हम वासनाओं का दमन कर मनोजय को प्राप्त हों।
हम अहंकार, काम, लोभ, घृणा, क्रोध और द्वेष से रहित हों।
हमारा हृदय दिव्य गुणों से परिपूरित करो।

हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें।
तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें।
सदा तुम्हारा ही स्मरण करें।
सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें।
तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो।
सदा हम तुममें ही निवास करें।

स्वामी शिवानन्द

समाचार और प्रतिवेदन

आश्रम-मुख्यालय के समाचार

'शिवानन्द होम' द्वारा सेवा

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय द्वारा आरम्भ किया गया 'शिवानन्द होम' ऐसे लोगों के लिए बहुत सहायक रहा है जो जरूरतमन्द हैं, निर्धन हैं, जिन्हें चिकित्सीय सहायता की आवश्यकता है किन्तु उसके लिए साधन नहीं हैं; ऐसे लोग जिन्हें मानवीय सहायता, सिर ढँकने को छत या देख-भाल करने को कोई चाहिए; ऐसे लोग भी जो दुःसाध्य रोगों से ग्रसित हैं। इस प्रकार के सभी लोगों के लिए 'होम' सहायता करने का हर सम्भव प्रयास करता है।

इस माह ऐसी घटना घटी कि रात्रि के लगभग १० बजे एक निर्जन स्थान से निस्सहाय पड़ा हुआ व्यक्ति भरती करने के लिए लाया गया। यह एक बड़ी आयु के बाबा जी थे, और इस तरह से वर्षा में भीगे हुए थे जैसे कई दिन से लगातार वर्षा में ही पड़े रहे हों। उनकी छोटी-सी, अल्प-पोषित देह दर्द और कष्ट से पीड़ित थी और उनकी रक्ताल्पता तो आश्चर्यजनक स्थिति मात्र १.८ एच. बी. तक पहुँच चुकी थी। यद्यपि उन्हें रक्त चढ़ाना तत्काल आरम्भ कर दिया गया था तो भी उनका अन्तिम समय आ गया था, अतः उन्होंने प्राण त्याग दिये। भगवान् उनकी आत्मा को परम शान्ति प्रदान करें! ॐ शान्तिः शान्तिः शान्ति :!

संसार के इस रंगमंच पर
जन्म और मृत्यु दो भ्रमपूर्ण दृश्य हैं।
वास्तव में न कोई जन्मता है न मरता है
न किसी का आगमन होता है न ही गमन।

(स्वामी शिवानन्द)

ऐसे व्यक्ति की भावनाओं के सम्बन्ध में अनुमान कर सकना भी कितना कठिन लगता है, जिसने अपना घर-परिवार अपनी इच्छा से किसी ऐसे उद्देश्य के लिए न छोड़ा हो, जैसे आध्यात्मिक जीवन जीने की इच्छा से होह्लह्लजिसमें व्यक्ति पूर्णतया प्रभु-समर्पित हो कर जैसी भी परिस्थिति सामने हो उसे गले लगाने को तैयार रहता है; बल्कि जो जान-बूझ कर, अपनी बीमारी से भयभीत हो कर, कभी वापस न लौटने की सोच कर घर छोड़ कर भाग आया हो, और पूरी तरह केवल एकमात्र भगवान् की ही दया पर निर्भर हो!

कितना कठिन और कितना चुनौतीपूर्ण है, श्री गुरुदेव के शब्दों में, ''एक क्षण के लिए सोचें कि आप स्वयं वह रोगी हैं, आपको क्या-क्या चीजों की जरूरत होगी? रोगी की आत्मा में प्रविष्ट हो कर देखें।'' उदाहरण के लिए एक बाबा जी हैं जो गत माह ही भरती किये गये हैं। इनके आधी तरफ के शरीर में पक्षाघात होने के कारण अत्यन्त कठिनाई से चल पाते हैं, बोल पाने में असमर्थ होने के कारण वह अपनी भावनाओं, आशंकाओं आदि को प्रकट नहीं कर पाते। यद्यपि पूरी तरह से सब समझ-बूझ रखते हैं। धीरे-धीरे इस रोगी का यहाँ मन लग गया है, अपने-आप अब चलने भी लग गया है, शरीर के

दुर्बल अंगों के लिए उपयोगी कसरत करने, वाणी को ठीक करने के अभ्यास करने तथा उलट-पुलट शब्द न निकलें इसका भी प्रयास करने लग गया है। अपने ढंग से अपनी बात समझा देने का रास्ता भी निकाल लिया है और इस प्रकार 'शिवानन्द होम' में अपने भाई लोगों में स्थान बना लिया है।

प्रभु का मुझसे वायदा है
वह मेरा भला करेंगे।
उनके शब्दों से मेरी आशा बँधी हुई है।
जब तक मेरा जीवन है, तब तक
वही मेरे रक्षक और भाग्यविधाता हैं।
(अमेज़िंग ग्रेस)

''भूखों को भोजन दें! नग्नों को वस्त्र दें! रोगियों की सेवा करें! यही दिव्य जीवन है।'' **स्वामी शिवानन्द**

सूचना

दिव्य जीवन संघ, सुरेन्द्रनगर शाखा, गुजरात का स्वर्ण-जयन्ती महोत्सव तथा साधना-शिविर

६ से ९ नवम्बर २००८ तक

परम पावन गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की अपार कृपा से दिव्य जीवन संघ की सुरेन्द्रनगर शाखा (गुजरात प्रान्त) ६ से ९ नवम्बर तक स्वर्ण-जयन्ती उत्सव मनाने जा रही है। इस शुभ अवसर पर एक त्रिदिवसीय साधना-शिविर आयोजित किया जा रहा है। दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के वरिष्ठ स्वामी जी महाराज इस साधना-शिविर में सम्मिलित हो कर निर्देशन प्रदान करेंगे। समस्त भक्त जन इसमें भाग लेने के लिए सादर आमन्त्रित हैं।

नामांकन और सूचना हेतु कृपया निम्नांकित पते पर सम्पर्क करें :

जे. एम. सुर, ७-हाटकेश्वर मन्दिर हॉल, सुरेन्द्रनगरह्ह३६२ ००१, गुजरात
दूरभाष : ०२७५२-२२५३४१, मोबाइल : ०९४२८२९२३५२

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

महत्त्वपूर्ण सूचना

ब्रह्मलीन परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज की सातवीं पुण्य-तिथि आध्यात्मिक पंचांग के अनुसार इस वर्ष मुख्यालय में ६ नवम्बर २००८ को मनायी जायेगी। इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए सभी सादर आमन्त्रित हैं।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की षोडशी आराधना

परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की २८ अगस्त २००८ की रात्रि के ८ बज कर ११ मिनट पर महासमाधि हो गयी। १२ सितम्बर २००८ को परम पूज्य स्वामी जी महाराज की षोडशी आराधना अत्यन्त भव्य रीति से विधिवत् सम्पन्न की गयी। पावन महासमाधि दिवस तथा षोडशी दिवस के बीच के १६ दिन आश्रम मुख्यालय में अत्यन्त भव्य रूप में श्रीमद् भागवत ज्ञान यज्ञ, तुलसीकृत 'श्री राम चरित मानस' पाठ, गीता यज्ञ, महारुद्राभिषेक और होम, चण्डी यज्ञ, षोडशी हवन, भजन-कीर्तन, स्कूल के बच्चों में भोजन-वितरण, साधुओं, निर्धनों, कुष्ठरोगियों तथा पशु-पक्षियों को भोजन-प्रसाद वितरण इत्यादि विविध कार्यक्रमों सहित सम्पन्न किये गये।

'दिव्य जीवन' पत्रिका के मई २००२ के अंक में परम पूज्य स्वामी जी महाराज की जो अन्तिम इच्छा प्रकाशित हुई थी, उसी का अक्षरशः पालन करते हुए २९ अगस्त को बहुत सुबह, सूर्योदय से बहुत पूर्व ही उन्हें जल-समाधि दे दी गयी थी। परम पूज्य स्वामी जी महाराज के पावन नश्वर-शरीर को पुष्पहारों से सुसज्जित लकड़ी के सिंहासन पर बैठा कर अर्धरात्रि १२ बजे शान्ति निवास, देहरादून से ला कर आश्रम मुख्यालय में परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के समाधि-मन्दिर में तीन घण्टे अर्थात् प्रातः ३ बजे तक रखा गया था जिससे कि आश्रमवासी भक्त अन्तिम दर्शन और अपने श्रद्धा-सुमन समर्पित कर लें। इस पूरे समय में महामन्त्र-संकीर्तन, जो कि गुरुदेव और स्वामी जी महाराज दोनों को ही अत्यन्त प्रिय था, का निरन्तर गान किया जाता रहा।

प्रातः ३ बजे, कर्पूर आरती करने के बाद पूज्य स्वामी जी के शरीर को महामन्त्र, 'ॐ नमः शिवाय', 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' और 'श्री राम जय राम जय जय राम' इत्यादि नाम-संकीर्तन गान करते हुए शोभा-यात्रा के रूप में भगवती माँ गंगा की ओर ले जाया गया। यह शोभा-यात्रा 'भजन हॉल' और 'श्री विश्वनाथ मन्दिर' के सामने रुकते हुए आश्रम की परिक्रमा करके 'शिवानन्द आर्क' की ओर जाने वाली मुख्य सड़क पर गयी और वहाँ से 'गुरु निवास' और 'गुरुदेव कुटीर' के सामने से होती हुई लगभग ४.३० पर माँ गंगा के 'श्री विश्वनाथ घाट' पर पहुँच गयी।

यहाँ पर गंगाजल और दूध के साथ वैदिक मन्त्रों और जो उन्हें विशेष रूप से प्रिय थे, उन पुरुषसूक्त और नारायणसूक्त के उच्च स्वर में गान के साथ अभिषेक किया गया। उसके उपरान्त परम्परागत विधि से नये वस्त्र समर्पण तथा भस्म, केसर, चन्दन और कुमुकुम से तिलक श्रृंगार किया गया।

उनके निर्देशों का अक्षरशः पालन करते हुए शरीर को गंगा माँ को समर्पित करने से पहले ७ बार 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय', ५ बार महामन्त्र, ५ बार महामृत्युंजय मन्त्र और १६ बार प्रणव मन्त्र का उच्चारण किया गया। इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखा गया कि 'चिदानन्द जी महाराज की जय' का उच्चारण न किया जाय, क्योंकि ऐसा करने के लिए उन्होंने हमें विशेष रूप से रोका हुआ था।

इसके पश्चात् पुष्पों से सुसज्जित उनके पावन शरीर को अति सुन्दर सजायी गयी नौका में ले जाया गया। मध्य धारा में धीमी गति से जाती हुई नौका की

इस अन्तिम यात्रा की ओर भक्तों का समूह एकटक दृष्टि से देख रहा था और माँ गंगा अपने प्रिय पुत्र की देह को आलिंगन करने के लिए बाहें फैलाये आतुर दृष्टि से निहार रही थी। जब पावन देह को गंगा में छोड़ा गया तो ऊपर 'शिवानन्द झूला' पर खड़े हुए भक्तों ने पुष्प-वर्षा की।

जिससे आजीवन अपने देह-मन को सदा मन, वाणी और कर्मों से परम पुनीत बनाये रखा' उसके लिए ऐसी अन्तिम विदाई हो तो इसमें क्या आश्चर्य!

शंकराचार्य सम्प्रदाय के संन्यासी की महासमाधि के उपरान्त षोडशी मनायी जाने की परम्परा के अनुसार, महासमाधि और षोडशी के बीच के १५ दिनों में विविध कार्यक्रम आयोजित किये गये। प्रतिदिन प्रातः का आरम्भ मन्त्र-श्लोक और प्रार्थना तथा ध्यान से होता और उसके उपरान्त प्रभातफेरी निकाली जाती थी। प्रत्येक कार्यक्रम के पीछे एक विशेष ही भक्ति और आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत भावना छलकती थी। सितम्बर के प्रथम सप्ताह में राजकोट के पूज्य श्री धवलनारायण आचार्य जी द्वारा श्रीमद्भागवत ज्ञान यज्ञ किया गया। अगले दिन, एक-दिवसीय अखण्ड पारायण तुलसीकृत 'श्री राम चरित मानस' का हुआ। प्रतिदिन स्कूल के बच्चों, साधुओं, निर्धन लोगों और पशु-पक्षियों को भोजन प्रसाद बाँटा जाता रहा।

११ सितम्बर २००८ को एक विशेष दिव्य यात्रा निकाली गयी जो आश्रम से दोपहर लगभग २ बजे प्रारम्भ हुई। यात्रा में बहुत से विशेष रूप से सजाये गये वाहन थे जिनमें परम पूज्य गुरुदेव तथा परम पूज्य स्वामी जी महाराज के विशाल चित्र मनोहर पुष्पों से अलंकृत करके रखे हुए थे। 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय', 'ॐ नमो नारायणाय', 'ॐ नमः शिवाय', 'श्री राम जय राम जय जय राम' तथा महामन्त्र का गान करते हुए यात्रा आगे बढ़ी। मार्ग में मुनिकीरेती और ऋषिकेश के लोग भी यात्रा में सम्मिलित हो गये। बहुत से लोग मग्न हो कर नृत्य करते हुए भी चल रहे थे। रास्ते में आने वाले सभी आश्रमों और संस्थाओं के माननीय लोगों ने अपने द्वार पर पहुँचने पर यात्रा की विशेष पूजा-आरती की और प्रसाद बाँटा। अनेक स्थानों पर लोगों ने सम्पूर्ण यात्रा पर पुष्प-वर्षा भी की। यात्रा में लगभग २००० से अधिक भक्त जन रहे होंगे और यह यात्रा आश्रम से आरम्भ हो कर धीमी गति से ऋषिकेश नगर में प्रवेश करती हुई भरत मन्दिर से हो कर पुनः आश्रम लौटी। यह यात्रा पूरे रास्ते में विशेष ज्ञान-प्रसाद के रूप में पुस्तिकाएँ तथा फल और मिठाइयों का प्रसाद आस-पास के लोगों में वितरित करती हुई चल रही थी। विविध आश्रमों और संस्थाओं के अतिरिक्त अन्य भक्त व्यापारियों ने यात्रा के सारे मार्ग को अत्यन्त सुन्दर द्वारों और झण्डों द्वारा सजाया था जो उनके दिव्य जीवन संघ की इन दो महान् विभूतियोंह्नह्नगुरुदेव और स्वामी जी महाराज के प्रति गहन प्रेम और श्रद्धा को अभिव्यक्त करता था।

१२ सितम्बर २००८ को मुख्य षोडशी कार्यक्रम दिवस पर यह आध्यात्मिक महोत्सव अपने चरम बिन्दु पर पहुँच गया था। दिवस का प्रारम्भ प्रातः ५ से ६ बजे तक ब्राह्ममुहूर्त के ध्यान-प्रार्थना सत्र और उसके उपरान्त प्रभातफेरी से हुआ।

पावन समाधि मन्दिर में ८ बजे विशेष पादुका-पूजा हुई जिसमें आश्रम के समस्त वरिष्ठ स्वामी जी सम्मिलित हुए। इसके बाद सभी

नव-निर्मित 'शिवानन्द सत्संग भवन' (शिवानन्द आडिटोरियम) में गये जो भाँति-भाँति के पुष्प-गुच्छों से तथा परम पूज्य स्वामी जी महाराज के विशालकाय चित्रों से समुचित रूप से सुसज्जित किया गया था।

मुख्य कार्यक्रम का प्रारम्भ परम पूज्य गुरुदेव के पावन-पादुका-पूजन से हुआ। उसके बाद ९.३० से ११.३० ब्रह्मलीन परम पूज्य स्वामी जी महाराज को श्रद्धांजलि-समर्पण का कार्यक्रम चला।

इस अवसर पर कैलास आश्रम के महामण्डलेश्वर श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी महाराज, परमार्थ निकेतन (ऋषिकेश) के महामण्डलेश्वर श्री स्वामी असंगानन्द जी महाराज, गरीबदास आश्रम (हरिद्वार) के महामण्डलेश्वर श्री स्वामी श्यामसुन्दर शास्त्री जी महाराज, साधना सदन (हरिद्वार) के महामण्डलेश्वर श्री स्वामी विश्वात्मानन्द पुरी जी महाराज, भारत माता मन्दिर (हरिद्वार) के महामण्डलेश्वर श्री स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरि जी महाराज, साधना केन्द्र आश्रम (डोमेट, देहरादून) के परम पूज्य श्री चन्द्रास्वामी जी महाराज, लक्ष्मणझूला के निकट लक्ष्मण कुटीर के परम पूज्य अवधूत सन्त लक्ष्मण दास जी महाराज, बिहार स्कूल ऑफ योगा (मुंगेर, बिहार) के अध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी निरंजनानन्द जी महाराज तथा आनन्द आश्रम, कांजनगढ़, केरला के परम पूज्य श्री स्वामी मुक्तानन्द जी महाराज ने श्रद्धांजलि समर्पित की। इनके अतिरिक्त अन्य कई संस्थानों जैसे चिन्मय मिशन, श्री श्री आनन्दमयी माँ मठ, रामकृष्ण मठ, गीता भवन, बाबा काली कमली वाला क्षेत्र इत्यादि से भी सन्त और वक्ता अपनी संस्थाओं की ओर से श्रद्धांजलि समर्पित करने के लिए आये हुए थे। प्रत्येक वक्ता ने अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि में परम पूज्य स्वामी जी महाराज को प्राणिमात्र के प्रति गहन प्रेम और करुणा पूर्ण भावना, उनकी अतीव विनम्रता तथा उनके द्युतिमान आध्यात्मिक व्यक्तित्व की तथा अन्य अनेक दैवी गुणों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

बाद में, १६ महात्माओं की आरती पूजा करके उन्हें पुष्पहार पहनाये गये तथा १६ विविध प्रकार के व्यंजनों से युक्त विशेष भोजन, दक्षिणा तथा अन्य उपहार भेंट दिये गये।

इसके अतिरिक्त ऋषिकेश, हरिद्वार तथा अन्य निकटवर्ती स्थानों से ३००० साधुओं को भोजन, दक्षिणा, कम्बल और कमण्डलु दिये गये। उस दिन दस सहस्र से अधिक लोगों को भण्डारा खिलाया गया।

सायंकाल में नौका-संकीर्तन तथा उसके उपरान्त विशेष गंगा-पूजन 'श्री विश्वनाथ घाट' पर हुआ जिसमें सहस्रों की संख्या में दीपक गंगा जी में छोड़े गये।

रात्रि-सत्संग में दैनिक कार्यक्रमों के अतिरिक्त विशेष भजन-सत्र हुआ तथा पूज्य श्री स्वामी जी महाराज के जीवन और कार्यों पर एक छायाचित्र भी दिखाया गया। आरती और विशेष प्रसाद वितरण सहित कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

भगवान् श्री विश्वनाथ तथा परम पूज्य गुरुदेव स्वामी शिवानन्द जी महाराज तथा परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की अपार कृपा से पूज्य स्वामी जी महाराज की षोडशी आराधना का यह आध्यात्मिक महोत्सव अत्यन्त भव्य रूप से सम्पन्न हुआ।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के उपाध्यक्ष/ट्रस्टी परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के उपाध्यक्ष/ट्रस्टी परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज १५ अगस्त से १७ अगस्त २००८ तक परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की पावन जन्म-स्थली पत्तमडै गये। १६ अगस्त के पूर्वाह्न में पूज्य स्वामी जी महाराज ने 'शिवानन्द मैमोरियल ट्रस्ट' की मीटिंग (न्यासी-सभा) की अध्यक्षता की। उसी दिन स्वामी जी गुरुभगवान् श्री स्वामी शिवानन्द जी के जन्म लेने वाले पावन-गृह के दर्शन करने भी गये और वहाँ पर चल रहे जीर्णोद्धार और नवीनीकरण के कार्य को भी देखा। फिर 'शिवानन्द स्ट्रीट' के सत्संग हॉल में गये और वहाँ पत्तमडै से एकत्रित हुए भक्त-समुदाय को सम्बोधित किया और वहाँ सायं ६.३० से ७.३० तक गुरु-भक्ति के विषय में प्रवचन दिये।

१७ अगस्त की प्रातः स्वामी जी उन प्रसिद्ध सन्त नम्मालवार के स्थान पर गये जो पाँच हजार वर्ष पुराने वृक्ष के नीचे रहते हैं और वह स्थान सागर-तट पर पावन तिरुचेंदूर भगवान् मुरुगन मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। अपराह्न में स्वामी जी तिरुनेवेली में क्वोकरकुलम् दिव्य जीवन संघ शाखा में गये। वहाँ सत्संग में पर्याप्त संख्या में गणमान्य व्यक्ति पधारे हुए थे। स्वामी जी ने 'जपयोग की अमोघ क्षमता' पर प्रवचन देते हुए इस तथ्य की पुष्टि की, कि भगवन्नाम में आश्चर्यजनक शक्तियाँ निहित हैं और यह साधकों के मन को उन्नत करने की विस्मयकारी शक्ति रखता है। इसके बाद स्वामी जी ने दिव्य जीवन संघ की गोपालसमुद्रम् शाखा द्वारा नव-निर्मित सत्संग हॉल में सत्संग में भाग लेते हुए वहाँ एकत्रित जन-समूह को आशीर्वचन दिये। १८ अगस्त को स्वामी जी पत्तमडै से चल कर रात्रि १० बजे नई दिल्ली पहुँचे।

१९ अगस्त की अपराह्न में स्वामी जी देहरादून पहुँचे और शान्ति निवास गये; वहाँ उन्होंने परम पूज्य परमाध्यक्ष स्वामी जी, श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के दर्शन किये तथा उन्हें पत्तमडै की यात्रा और न्यासियों की गोष्ठी (ट्रस्टी मीटिंग) के सम्बन्ध में संक्षिप्त विवरण दिया और पूज्य स्वामी जी महाराज से अपनी मलेशिया की आगामी यात्रा के लिए आशीर्वाद की प्रार्थना की! पूज्य स्वामी जी महाराज ने हँसते हुए अपनी १९६६ में की गयी मलेशिया यात्रा के सम्बन्ध में बताया, वहाँ श्री स्वामी प्रणवानन्द जी के विषय में चर्चा की तथा श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी को आगामी यात्रा की सफलता के लिए आशीर्वाद दिये।

दिव्य जीवन संघ, मलेशिया के अध्यक्ष श्री स्वामी गुहभक्तानन्द जी महाराज के आमन्त्रण पर, परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज ने मलेशिया शाखा के संस्थापक अध्यक्ष श्री स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज के २६ से २९ तक होने वाले जन्म शताब्दी महोत्सव में भाग लेने के लिए श्री स्वामी

योगस्वरूपानन्द जी महाराज को जाने के लिए कहा था। अतः स्वामी जी २६ अगस्त की प्रातः शिवानन्द आश्रम, बाटुकेव्ज , कौलालम्पुर पहुँचे, सत्संग में सम्मिलित हुए तथा 'दैनिक जीवन में वेदान्त' विषय पर प्रवचन दिये। २७ अगस्त को श्री स्वामी प्रणवानन्द जन्म-शताब्दी स्मृति पर प्रवचन दिये। मुख्य कार्यक्रम २८ अगस्त को था जो प्रातःकालीन प्रार्थना-ध्यान से आरम्भ हो कर गुरुदेव-पादुका-पूजा, आरती, प्रसाद-वितरण, अन्न-दान इत्यादि कार्यक्रमों सहित सायंकाल तक चला। श्री स्वामी गुहभक्तानन्द जी ने अपने विस्तृत प्रवचन में श्री स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज के जीवन-चरित तथा उनके मलेशिया में दिव्य जीवन संघ की गतिविधियों के प्रचार-प्रसार के सम्बन्ध में चर्चा करते हुए बताया कि उन्होंने किस प्रकार गत चार दशकों में मलेशिया में, वहाँ के समस्त समर्पित भक्तों के सहयोग से इतने महान् और आदर्श कार्य किये। श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी ने तीन मंजिले नव-निर्मित भवन का उद्घाटन किया। इस भवन को 'योगा-ब्लाक' नाम दिया गया था। इसमें 'श्री स्वामी प्रणवानन्द जन्म-शताब्दी स्मृति हॉल' के अतिरिक्त, अतिथियों के लिए कमरे तथा अन्य विविध कार्यों के लिए हॉल इत्यादि की दो मंजिलें और बनायी गयी हैं।

रात्रि १०.४५ पर स्वामी योगस्वरूपानन्द जी को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की शान्ति निवास, देहरादून में हुई महासमाधि का दूरभाष द्वारा शोक-समाचार मिला, जिससे वह अन्य सभी कार्यक्रमों को रद्द करके ३० अगस्त २००८ को मुख्यालय पहुँच गये।

योग-वेदान्त फारेस्ट एकाडेमी का हीरक जयन्ती समारोह

परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की अपार कृपा से और दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के परमाध्यक्ष परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के आशीर्वाद, निर्देशन और प्रोत्साहन से योग-वेदान्त फारेस्ट एकाडेमी का हीरक जयन्ती महोत्सव २९ जून से ३ जुलाई २००८ तक दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के 'शिवानन्द सत्संग भवन' में अत्यन्त भव्य रूप में मनाया गया। इसमें प्राध्यापक वर्ग, बाहर से पधारे अन्य प्रवक्ता गण, अतिथि, अभ्यागत तथा आश्रमवासीह्लह्लसबको मिला कर कुल ४५० के लगभग लोग सम्मिलित हुए।

समारोह का शुभारम्भ २९ जून को प्रातः ६ से ७ बजे पारम्परिक तथा भव्य रूप में, विश्व-शान्ति, सर्वकल्याण और सम्पूर्ण कार्यक्रम के सफलतापूर्वक सम्पन्न होने हेतु यज्ञ से हुआ। अपराह्न-सत्र परम पावन पादुकाओं की महापूजा से प्रारम्भ हुआ। उसके उपरान्त दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के महासचिव परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने दीप प्रज्वलित करके तथा दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के कोषाध्यक्ष पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने परम आराध्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज का आशीर्वाद-सन्देश पढ़ कर समारोह को प्रारम्भ किया।

इस शुभ अवसर पर समस्त वरिष्ठ स्वामी जी ने श्रोताओं को अपनी शुभ-कामनाएँ और आशीर्वाद दिये। दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज ने उन सभी को हार्दिक बधाई दी, जिनका योग-वेदान्त फारेस्ट एकाडेमी को इतनी श्लाघ्य ऊँचाइयों तक ले जाने में योगदान रहा है, और उन्होंने कहा कि एकाडेमी का मूलभूत उद्देश्य योग और वेदान्त का ज्ञान प्रदान करना है जो हमें एक अधिक श्रेष्ठ मानव बनाता है और इस प्रकार यह हमें हमारे आध्यात्मिक और सांसारिकह्लह्लदोनों ही प्रकार के जीवन में सहायता देता है।

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज ने कहा कि ३ जुलाई १९४८ को योग-वेदान्त फारेस्ट एकाडेमी प्रारम्भ करके गुरुदेव ने शिवानन्द आश्रम में ज्ञान-गंगा प्रवाहित कर दी। एकाडेमी में प्रवेश पाने से समस्त विकार दूर हो जाते हैं, क्योंकि यह ज्ञान प्रदान करती है और व्यक्ति को आत्म-साक्षात्कार के पथ पर अग्रसर कर देती है।

एकाडेमी के कुलसचिव श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज ने श्रोताओं को बताया कि इस शुभ अवसर के उपलक्ष्य में एक हीरक जयन्ती स्मृतिग्रन्थ, एक पुस्तक जिसका नाम 'स्पिरिचुअल एण्ड एथिकल इण्डिया' है तथा चार अन्य पुस्तिकाएँह्णह्ण'हैप्पिनैस इज़ विदिन एण्ड अदर पर्लज़', लेखक स्वामी शिवानन्द; 'योगा एण्ड वेदान्ता एकौर्डिंग टू स्वामी शिवानन्द एण्ड स्वामी चिदानन्द'; 'दी ट्रुथ एबाउट योगा एण्ड मेडीटेशन', स्वामी चिदानन्द कृत; और 'स्वामी शिवानन्द एण्ड स्पिरिचुअल रिनेसैंस', स्वामी कृष्णानन्द कृत तथा स्वामी शिवानन्द स्तम्भ का स्मृति-चिह्न (ममैंटो) तैयार किये गये हैं। यह सब २७ जून २००८ को दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के परमाध्यक्ष परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के पावन कर-कमलों द्वारा, उनके वर्तमान निवास-स्थान, शान्ति निवास, देहरादून में विमोचित किये गये हैं। इनके चित्र मंच पर दर्शनार्थ लगा दिये गये हैं। परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज ने स्मृतिग्रन्थ, पुस्तक तथा पुस्तिकाओं इत्यादि का उन्मोचन करते समय उन्हें अत्यन्त भली-भाँति देखा, उनकी श्लाघा की और हम सब पर आशीर्वादों की कृपा-वृष्टि की है।

२९ जून २००८ के पूर्वाह्न-सत्र में २० पुराने छात्रों और २ प्राध्यापकों ने अपने-अपने विचार और सुझाव अभिव्यक्त किये। सभी वक्ताओं का यह विचार था कि वर्तमान योग-वेदान्त पाठ्यक्रम अत्यन्त उपयोगी है; और यह भी, कि उन्होंने इससे बहुत कुछ उपलब्धि प्राप्त की है। कुछेक प्रवक्ताओं ने सुझाव भी दिये।

३० जून से २ जुलाई २००८ तक एक तीन दिवसीय सम्मेलन किया गया जिसमें विचार-विनिमय का विषय थाह्णह्ण 'वर्तमान युग में आध्यात्मिकता की भूमिका।' परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए अपने उद्घाटन-प्रवचन में कहा कि दिव्य जीवन योग और वेदान्त पर आधारित है और इन दो सिद्धान्तों के अनुसार अपना जीवन जीने के लिए हमें इन दोनों धारणाओं को तथा अपने मन को भी भली-भाँति जानना होगा। स्वामी जी ने प्रत्येक क्षेत्र में मध्यम मार्ग अपनाने पर बल दिया और भगवान् श्री कृष्ण द्वारा दिये गये निर्देशों अर्थात् वैराग्य और अभ्यास का महत्त्व बतलाते हुए प्रवचन का समापन किया।

हमारे आश्रम के तथा भारत के विविध स्थानों से पधारे हुए कुल मिला कर बीस विद्वत्त प्रवक्ताओं ने सम्मेलन में भाग ले कर सम्मेलन के मूल विषय पर वक्तव्य दिये।

प्रो. हुदानन्द राय (कटक, उड़ीसा) ने कहा कि प्रत्येक युग अपने समय में वर्तमान काल होता है । उन्होंने कहा कि न केवल आज के मानव को वैश्वीकरण (ग्लोबलाइज़ेशन), उन्मुक्त व्यापार, उन्मुक्त अर्थनीति, वैश्वीय उष्णीकरण (ग्लोबलवार्मिंग) इत्यादि की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, प्रत्युत पर्यावरण को भी मानव के द्वारा चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। हमें इस बात की गहराई से जाँच करनी चाहिए कि हम क्या कर रहे हैं और क्यों कर रहे हैं। उनका विचार था कि कुछ भी करने से पूर्व यदि हम उसके 'क्या' और 'क्यों' का भली-भाँति परीक्षण कर लें तो हमारी समस्याएँ हल हो जायेंगी।

परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज ने कहा कि हमें श्रीमद्भगवद्गीता और गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की शिक्षाओं का पालन करना चाहिए। जप, ध्यान और प्राणायाम हमारे उस मन को शान्त करने के लिए अत्यन्त उपयोगी साधनाएँ हैं, जो मन सब समस्याओं का मूल कारण है। भले बनो, भला करो, किसी को भी मन, वाणी या कर्म द्वारा किसी प्रकार की चोट न पहुँचाओ। स्वामी जी महाराज ने कहा कि आध्यात्मिक साधनाएँ नियमित रूप से प्रतिदिन करनी चाहिए, क्योंकि ये आजीवन करते रहने के लिए ही हैं।

परम पूज्य श्री स्वामी आत्मस्वरूपानन्द जी महाराज (एकाडेमी के प्राध्यापक) ने आध्यात्मिकता पर तीन पहलुओं से विचार प्रकट कियेह्णह्णप्रथम, आध्यात्मिकता का अर्थ है उसे प्राप्त करने के लिए साधना करना, जो हम वास्तव में हैं ही। द्वितीय, इसका अर्थ बाह्य और भीतरी रूप का परस्पर सामंजस्य स्थापित करना है। तृतीय अर्थ है कि हमें वैदिक जीवन यापन शैली का

अनुसरण करना चाहिए जिसमें चारों पुरुषार्थों के अनुसार अपने-अपने ढंग से जीवन यापन करना बताया गया है। इसका अर्थ है कि हमें अपनी जीवन का अर्ध भाग जीवन की आवश्यकताओं को पूर्ण करते हुए, धर्मानुसार अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए जीवन के आवश्यक सुख-भोगों और आवश्यक इच्छाओं को पूर्ण करना और शेष आधा जीवन मोक्ष-प्राप्ति के प्रयत्न में लगाना चाहिए।

ब्रह्मपुर (उड़ीसा) के श्री स्वामी शिवानन्द गुरुसेवानन्द जी महाराज ने अपने प्रवचन में इस बात पर बल दिया कि गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की शिक्षाएँह्नह्न'सेवा, भक्ति, ध्यान द्वारा आत्म-साक्षात्कार करो' सर्वोत्तम हैं, इस जीवन में प्रत्येक बुराई और दुर्गुणों से मुक्त रहने के लिए गुरुदेव की इन शिक्षाओं का अनुसरण करना चाहिए। उन्होंने कहा कि गृहस्थ भी यदि शुद्धता, निष्कपटता और ईमानदारी के मार्ग का अनुसरण करे तो अपने जीवन को गृहस्थी में रहते हुए ही आध्यात्मिक बना सकता है।

परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज ने कहा कि परमात्मा के अस्तित्व में विश्वास होना ही आध्यात्मिकता है। परम सत्ता से सीधा सम्पर्क स्थापित कर लेना आध्यात्मिकता है। स्वामी जी ने चार पुरुषार्थोंह्नह्नधर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के सम्बन्ध में बात करते हुए कहा कि मनुष्य शाश्वत सुख चाहता है जो कि धर्म के नियमानुसार चलने और आध्यात्मिक साधना में लग जाने से ही प्राप्त किया जा सकता है। हमें अपने जीवन में इस प्रकार रहना चाहिए कि हम सदैव परमात्मा से जुड़े रहें। जीवन को सही ढंग से तथा अधिक अच्छे ढंग से जीने के लिए आज के जगत् में आध्यात्मिकता और भी अधिक महत्त्वपूर्ण है।

वडोदरा (गुजरात) के डा. जयन्त बी. दवे का विचार था कि आध्यात्मिकता का अर्थ है भगवान् से सम्पर्क, मानव मात्र से भाईचारा और पर्यावरण। वह कुछ भी, जो हमारी चेतना को उन्नत करे, आध्यात्मिकता है। कुछ भी, जो आनन्दप्रद और पवित्र है, आध्यात्मिकता है। आध्यात्मिकता हमें बताती है कि हम जीवात्माएँ, यदि हम प्रसन्न और आनन्दित रहना चाहते हैं तो हमें भगवान् का उपकरण मात्र बन कर हर कार्य करना चाहिए। उन्होंने कहा कि गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की इस विषय में शिक्षाएँ सर्वश्रेष्ठ हैं तथा योग-वेदान्त फारेस्ट एकाडेमी हमारे इस धर्मनिरपेक्ष देश भारत में आध्यात्मिकता को सही रूप में प्रोत्साहन देने का कार्य अत्यन्त कुशलता से कर रही है।

एकाडेमी के प्राध्यापकह्नह्नजोधपुर (राजस्थान) के प्रो. जे. एन. असोपा जी ने कहा कि इस सम्मेलन का मूल विषय कि आध्यात्मिकता की वर्तमान समय में क्या सम्बद्धता है, अत्यन्त सरल है किन्तु साथ ही अत्यन्त दुरूह भी है। उनके विचारानुसार यह एक व्यवस्था है, जीवन जीने का एक ढंग, एक तरीका है। यदि हम आध्यात्मिकता में जीते हैं तो हम जो-कुछ भी करते हैं, भगवान् का ही चिन्तन करते हुए करते हैं। ईश्वर की संकल्पना हमारे लिए कोई नवीन धारणा नहीं है। आध्यात्मिकता हमारी परम्परा से सम्बद्ध और शालीनता की प्राण-शक्ति है। अपने विचार-बिन्दु को अभिव्यक्त करने के लिए उन्होंने उदाहरण दे कर समझाया। संक्षेप में आध्यात्मिकता आत्मा का परिष्कार, इसका संवर्धन है।

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के श्री स्वामी रामराज्यम् जी महाराज का विचार था कि मानव अपने अहं के नियन्त्रण से आबद्ध एक संकीर्ण व्यक्तित्व है। उसका यह अहं दूसरों के ऊपर हावी होने के लिए उनसे टकराता है जिसका परिणाम लड़ाई-झगड़े, स्वकेन्द्रियता और दूसरों के साथ सम्बन्ध बनाये रखने की असमर्थता इत्यादि होते हैं। यह अहं आध्यात्मिकताह्नह्नजो कि हमारे आन्तरिक जीवन का विशिष्ट ज्ञान हैह्नह्नके द्वारा कम किया जा सकता है। ध्यान नैतिकता और आध्यात्मिकता का सुदृढ़ पोषक है। स्वामी जी ने इस विचार का समर्थन करते हुए बल दे कर कहा कि इसलिए सबको आध्यात्मिक साधना अवश्यमेव करनी चाहिए।

एकाडेमी के प्राध्यापक पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने अपने प्रवचन के आरम्भ में कहा कि निस्सन्देह रूप से शिल्पविज्ञानीय (टैक्नौलोजिकल) विकास ने मानव-जीवन को अधिक सुविधा-सम्पन्न बना दिया है, किन्तु वास्तविक अर्थों में वह खुश नहीं है। सर्वश्रेष्ठ शिक्षा तथा सर्वोत्तम भौतिक सुख-सुविधाएँ उपलब्ध होने पर भी, उन्हें प्राप्त कर लेने पर भी, आज का युवक तनावग्रस्त है। यह सब इसलिए है, क्योंकि उसने अपने वास्तविक स्वरूप की, निजी व्यक्तित्व की उपेक्षा कर दी है। योग-वेदान्त के पाठ्यक्रम में से गुजरने के उपरान्त विद्यार्थियों ने अपने दृष्टिकोण में होने वाले परिवर्तन को अनुभव किया है और

उन्होंने स्वयं में अधिक शान्ति और प्रसन्नता को आते देखा है। स्वामी जी महाराज ने बल देते हुए कहा कि हमें अपने वास्तविक निज-स्वरूप को जानना चाहिए, यही हमारे जीवन को समृद्ध बनायेगा। हमें अपने 'आध्यात्मिक व्यक्तित्व' की ओर ध्यान देना चाहिए।

एकाडेमी के पूर्व-प्राध्यापक श्री स्वामी निराकारानन्द जी महाराज का विचार था कि आज के युग में शिल्पविज्ञान के विकास से मीडिया (प्रचार-प्रसार के साधन) ने हमारे मन-बुद्धि पर पूर्ण रूप से नियन्त्रण कर लिया है। ऐसी परिस्थितियों में आध्यात्मिकता एक 'अनिवार्यता' है। प्रत्येक व्यक्ति को वेदान्त का, और मोह तथा अज्ञान के परिणाम का ज्ञान अवश्यमेव होना चाहिए। हमें हमारे वास्तविक स्वरूप के सम्बन्ध में चिन्तन करना चाहिए। उन्होंने श्रोताओं से परम पूज्य गुरुदेव के उपदेशों पर चलने का अनुरोध किया

प्राध्यापक और सह-कुलसचिव प्रो. राजेन्द्र कुमार भारद्वाज जी ने कहा कि आज का मानव अन्धा-धुन्ध दौड़ में लगा हुआ है, जिससे समाज पर अनगिनत बुराइयों ने सब ओर, सभी क्षेत्रों पर आक्रमण कर दिया है। इन सभी बुराइयों का एकमात्र हल आध्यात्मिकता है। आध्यात्मिकता का मूल आधार धर्म है, और धर्म है हमारे कर्तव्य! हमें अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण के द्वारा, निस्स्वार्थ सेवा, प्रेम और करुणा के द्वारा दिन-प्रति-दिन एक बेहतर इन्सान, एक अधिक अच्छा मानव बनना चाहिए। आध्यात्मिकता की पुनर्सरचना के लिए गुरुदेव का 'साधना-तत्त्व' सर्वश्रेष्ठ है।

श्री स्वामी राधाकृष्णानन्द जी महाराज ने कहा कि हमें देखना होगा कि समाज की क्या समस्याएँ हैं और उन्हें आध्यात्मिकता से हम कैसे हल कर सकते हैं। वैराग्य के अभाव में आध्यात्मिकता का होना असम्भव है। हमें दूसरों के धर्म और विचारों का सम्मान करना चाहिए, क्योंकि सभी नामों और रूपों में एकमात्र वही परमात्मा है। हमें दूसरे के प्रति घृणा का भाव नहीं रखना चाहिए।

जयपुर (राजस्थान) के श्री स्वामी भागवतानन्द जी महाराज ने कहा कि आध्यात्मिकता शब्द के बहुत से अर्थ हैं। हम सत्-चित्-आनन्द स्वरूप हैं। वैश्व चेतना अर्थात् परम आत्मा एकमेव है। एकता आध्यात्मिकता है। वर्तमान संसार प्रसार-प्रचार का संसार है जिसमें विद्युत् अणु-उपकरणों (रेडियो, टीवी, कम्प्यूटर इत्यादि) का बोलबाला है। औद्योगीकरण का द्रुत गति से विकास है; इन सबके परिणाम स्वरूप अपराध-वृत्ति, प्रदूषण, असन्तोष और आतंकवाद इत्यादि बढ़ते जा रहे हैं। स्वामी जी का विचार है कि शिक्षा-प्रणाली में परिवर्तन और सुधार लाना चाहिए। इसे मस्तिष्क, हृदय और हाथ तीनों की ओर उन्मुख होना चाहिए। जीवन के सही मूल्यों को मन में बैठाना होगा ताकि हम आध्यात्मिक हो सकें।

एकाडेमी के प्राध्यापक और कुलसचिव श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज ने कहा कि आध्यात्मिकता को सभी युगों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी होती है। गुरुदेव परम पावन श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के अनुसार, ''आध्यात्मिकता का अर्थ है दिव्य आदर्शों के रूप में स्वयं को समुन्नत करना। यह आपका मानव-प्रकृति से दिव्यता में रूपान्तरण होना है।'' इसके लिए आपको आत्म-नियन्त्रण और इन्द्रिय-दमन करना चाहिए, नित्य अन्तर्निरीक्षण करें, सादा जीवन जियें जो धर्म और नैतिक सिद्धान्तों पर आधारित हो। यह सब हमें संसार के साथ सामंजस्य बनाये रखने में भी सहायक होंगे साथ ही दूसरी ओर प्रभु-प्राप्ति, आत्मसाक्षात्कार-प्राप्ति की ओर अग्रसर करेंगे। उन्होंने कहा कि कुछ लोगों को आध्यात्मिकता शब्द से ही विकर्षण या घृणा होती है, उनके लिए आध्यात्मिकता का अर्थ 'शुभ कर्म', 'कर्मों में शुचिता' अथवा 'भलाई' है।

एकाडेमी के प्राध्यापक, कटक (उड़ीसा) के प्रो. बी. बी. चौधरी जी ने कहा कि वर्तमान युग विज्ञान और शिल्पविज्ञान (टैक्नोलोजी) का युग है। किन्तु समस्त सुख-सुविधाओं के होते हुए भी, आधुनिक युग ने मानव को अशान्त बना दिया है, वह बेचैन है। वह व्याकुल है, क्योंकि उसे जीवन के सही अर्थ नहीं मिल रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह ऐसा इसलिए हो रहा है, क्योंकि वह 'अहं' पर आधारित हो, उसी के अनुसार कार्यरत है। जब व्यक्ति स्वयं को अहं के शिकंजे से मुक्त कर लेता है तब वह 'मैं कर्ता' न हो कर एक अभिनेता बन जाता है और उसका 'मैं' द्रष्टा मात्र रह कर हर घटना को देखता है। तब वह अपने कर्मों का भोक्ता नहीं रहता, केवल दूर से देखता भर रहता है। अतः उसके चारों ओर जो भी घटता रहे, वह हर परिस्थिति में शान्त रहता है।

परम पूज्य श्री स्वामी त्यागवैराग्यानन्द जी महाराज ने कहा कि साधक के लिए चित्त-शुद्धि करना अत्यन्त आवश्यक है। हमें खुशी की तलाश करने की अपेक्षा सत्य की खोज करनी चाहिए, सत्य के साथ प्रसन्नता स्वयमेव ही आ जायेगी। हमारी प्रसन्नता दूसरों को दुःख देने का कारण नहीं होनी चाहिए। यह समाज अथवा पर्यावरण के लिए समस्या नहीं होनी चाहिए। स्वामी जी ने कहा कि हमें सदैव मृत्यु का स्मरण बनाये रखना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से हम में वैराग्य उत्पन्न होगा तथा काम, क्रोध और लोभ इत्यादि जैसे दोष-दुर्गुण भी हम में नहीं आयेंगे। इससे हमारा जीवन आध्यात्मिक हो जायेगा।

बरेली (उत्तर प्रदेश) के डा. एम. एन. रस्तोगी जी, जो कि एकाडेमी के पूर्व-प्राध्यापक हैं, ने कहा कि गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज आध्यात्मिकता की साकार प्रतिमा थे। वे समन्वययोग के समर्थक थे। उन्होंने श्रोताओं से स्वामी शिवानन्द जी महाराज तथा स्वामी चिदानन्द जी महाराज के उपदेशों का पालन करने का अनुरोध किया।

पूर्व-प्राध्यापक, रिवाड़ी (हरियाणा) के प्रो. वासुदेव रणदेव जी ने कहा कि वर्तमान युग तनावों और संघर्षों का युग है जिससे मानव-मन पीड़ित हैं और मानव-हृदय रक्त-रंजित हैं। इसका एकमात्र हल आध्यात्मिकता है, और आध्यात्मिकता हैह्नह्नपरमात्मा में पूर्ण विश्वास रखते हुए जीवन जीना। मनुष्य जो-कुछ वास्तव में है वही उसका वास्तविक निज स्वरूप है, किन्तु वह अपने उस 'होने पन' को नकारता हुआ सदैव कुछ-न-कुछ बनने में व्यस्त रहता है। आवश्यकताओं की पूर्ति से कभी भी सन्तुष्ट न हो कर वह अपने लोभ का पेट भरने को प्रयत्नशील रहता है जो कभी भी भरता नहीं। उसे अन्तर्निरीक्षण करना चाहिए और जीवन के प्रति निम्न दृष्टिकोण को दूर करना चाहिए। उसे अपना आत्मोत्थान करना चाहिए और फिर दिव्योत्थान कर लेना चाहिए।

खण्डगिरि, भुवनेश्वर (उड़ीसा) के 'स्वामी शिवानन्द सैंटेनरी बॉयज़ हाई स्कूल' के सचिव श्री स्वामी शिवचिदानन्द जी महाराज ने कहा कि शुद्ध-पवित्र जीवन जीना ही आध्यात्मिकता है। उन्होंने समस्त योगों के समन्वयीकरण और धर्मों के एकीकरण पर बल दिया। गुरुदेव के लिए सब धर्म समान थे। उन्होंने श्रोताओं से गुरुदेव की शिक्षाओं यथाह्नह्न'बीस आध्यात्मिक उपदेश', 'राष्ट्रीय आचार संहिता' और 'विश्व-प्रार्थना' इत्यादि का अनुसरण करने और प्रचार-प्रसार करने का अनुरोध किया।

गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज से प्रत्यक्ष-दीक्षित, चेन्नै की श्री स्वामी (देवी) वसन्तानन्द माता जी ने 'वर्तमान युग में आध्यात्मिकता की भूमिका' विषय पर बोलते हुए गुरुदेव द्वारा अद्वैत-दर्शन को जन-जन तक लाने के रूप में, मानवता की विलक्षण सेवा करने की प्रशंसा कीह्नह्नक्योंकि गुरुदेव ने सरल अँगरेजी भाषा में यह सब लिखा जो कि अधिकांश भारत और विदेशों में लोग संस्कृत से अधिक संख्या में समझ सकते हैं, माता जी ने कहा कि गुरुदेव ने जाति और धर्म की परम्परागत लकीरों की तोड़ कर सर्वोच्च सत्ता तक पहुँचने के लिए सबको प्रोत्साहित किया।

३ जुलाई २००८ के समापन दिवस को ब्राह्ममुहूर्त ध्यान-सत्र के उपरान्त पूज्य श्री स्वामी आत्मस्वरूपानन्द जी महाराज ने संक्षिप्त प्रवचन दिया। उसके उपरान्त प्रातः छह बजे प्रभातफेरी निकाली गयी। हल्की-हल्की वर्षा की फुहारों में भी बड़ी संख्या में आश्रम के अन्तेवासी तथा सम्मेलन में भाग लेने वाले लगभग सभी इसमें सम्मिलित हुए। सभी में पर्याप्त उत्साह दिखायी दे रहा था, वे प्रभु-संकीर्तन करते हुए चल रहे थे और कई तो नृत्य भी करते जा रहे थे।

अपराह्न का समापन समारोह ८-३० बजे 'जय गणेश' कीर्तन से प्रारम्भ हुआ। उसके उपरान्त परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज और परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने श्रोताओं को आशीर्वचन दिये। इसके पश्चात् अतिथि-वक्ताओं, पूर्व और वर्तमान प्राध्यापक वर्ग तथा अन्य जिन्होंने भी इस कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान दिया था सभी को सम्मानित किया गया तथा स्वयंसेवकों को भी विशेष प्रसाद दिया गया। एकाडेमी के कुलसचिव श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज द्वारा धन्यवाद-प्रस्ताव प्रस्तुत करने, समापन-प्रार्थनाओं, प्रसाद-वितरण, ज्ञान-प्रसादह्नह्नस्मृति-ग्रन्थ, पुस्तक और पुस्तिकाओं के वितरण के साथ ही अत्यन्त हर्षोल्लास भरे वातावरण में करतल ध्वनियों की गूँज और प्रसन्नतापूर्ण चेहरों से पूर्ण वातावरण में कार्यक्रम समाप्त हुआ। □ □ □

सूचना

दिव्य जीवन संघ, सुरेन्द्रनगर शाखा, गुजरात का स्वर्ण-जयन्ती महोत्सव तथा साधना-शिविर

६ से ९ नवम्बर २००८ तक

परम पावन गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की अपार कृपा से दिव्य जीवन संघ की सुरेन्द्रनगर शाखा (गुजरात प्रान्त) ६ से ९ नवम्बर तक स्वर्ण-जयन्ती उत्सव मनाने जा रही है। इस शुभ अवसर पर एक त्रिदिवसीय साधना-शिविर आयोजित किया जा रहा है। दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के वरिष्ठ स्वामी जी महाराज इस साधना-शिविर में सम्मिलित हो कर निर्देशन प्रदान करेंगे। समस्त भक्त जन इसमें भाग लेने के लिए सादर आमन्त्रित हैं।

नामांकन और सूचना हेतु कृपया निम्नांकित पते पर सम्पर्क करें :

जे. एम. सुर, ७-हाटकेश्वर मन्दिर ०९४२८२९२३५२
हॉल, सुरेन्द्रनगरह्लह्ल३६२ ००१, गुजरात
दूरभाष : ०२७५२-२२५३४१, मोबाइल :

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

सूचना

ब्रह्मलीन परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज की सातवीं पुण्य-तिथि आध्यात्मिक पंचांग के अनुसार इस वर्ष मुख्यालय में ६ नवम्बर २००८ को मनायी जायेगी। इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए सभी सादर आमन्त्रित हैं।

ह्लह्लदिव्य जीवन संघ

फोर्थ कवर (अतिरिक्त)

साधना की विभिन्न विधियाँ

जो कर्मयोग के पथ का अनुसरण करना चाहते हैं, उन्हें पीड़ित मानवता तथा समाज के लिए अनेक प्रकार से निष्काम सेवा करनी चाहिए। आपको ईश्वरार्पण की भाँति भगवान् को कर्मफलों को अर्पित कर देना चाहिए। आप यह स्वीकार कर कि आप भगवान् के हाथों में उपकरण मात्र हैं, कर्ताभाव को त्याग देना चाहिए। आपको स्वार्थता त्याग देनी चाहिए और इन्द्रियों पर नियन्त्रण करना चाहिए। आपको मानवता की सेवा में अपना सारा जीवन समर्पित कर देना चाहिए। आपको सोचना चाहिए कि यह सम्पूर्ण जगत् ईश्वर का प्रकट स्वरूप है। आपको इसी भाव से मानवता की सेवा करनी चाहिए। आपका हृदय शीघ्र पवित्र हो जायेगा। आप चित्त-शुद्धि के द्वारा आत्मा का ज्ञान प्राप्त करेंगे। यह कर्मयोगियों हेतु साधना है। यह आध्यात्मिक पथ के सभी नवाभ्यासियों हेतु अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

यदि आप भक्ति के पथ का अनुसरण करें, तो आपको जप करना चाहिए तथा भागवत या रामायण जैसे पवित्र ग्रन्थ का अध्ययन करना चाहिए। आपको नवधा भक्ति का अभ्यास करना चाहिए। आपको व्रत, अनुष्ठान करना चाहिए, प्रार्थना और मानसिक पूजा करनी चाहिए। चूँकि भगवान् सभी प्राणियों में वास करता है, अतः आपको मानवता की सेवा भी करनी चाहिए।

एक राजयोगी भी आठों अंगों के अभ्यास द्वारा योग सीढ़ी पर धीरे-धीरे चढ़ता है। आपको शरीर तथा मन को स्थिर रखने के लिए और नाड़ियों को शुद्ध करने के लिए आसन और प्राणायाम का अभ्यास करना चाहिए। तत्पश्चात् प्रत्याहार, धारणा एवं ध्यान के अभ्यास से आप समाधि में प्रविष्ठ हो जायेंगे।

जो वेदान्त या ज्ञानयोग का पथ अपनाते हैं, उन्हें प्रथम चार साधनोंह्रह्रविवेक, वैराग्य, षडसम्पत् और मुमुक्षुत्व को अर्जित करना चाहिए, तत्पश्चात् उन्हें एक ब्रह्मनिष्ठ गुरु के पास जाना चाहिए और उनसे सत्य का श्रवण करना चाहिए। उपरोक्त श्रवण, मनन और निदिध्यासन (साधना) के द्वारा वे आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करेंगे।

ज्ञानी अन्त में आनन्द के साथ घोषित करता हैह्रह्रआत्मा एक है, आत्मा ही एकमात्र सत्य है। मैं ब्रह्म हूँ। अहं ब्रह्मास्मि। शिवोऽहं। सर्वं खल्विदं ब्रह्म। मुक्त जीवन्मुक्त सभी प्राणियों में आत्मा को तथा आत्मा में सभी प्राणियों को देखता है।

ह्रस्वामी शिवानन्द

महत्त्वपूर्ण सूचना

शिवानन्द आश्रम, ऋषिकेश, उत्तराखण्ड के एक वरिष्ठ संन्यासी, परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज २८ सितम्बर २००८ को दिव्य जीवन संघ ट्रस्ट के चेयरमैन तथा तद्‌पदानुसार दिव्य जीवन संघ के प्रेसिडेण्ट (परमाध्यक्ष) निर्वाचित किये गये हैं।

श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज सभी को हार्दिक अभिवादन भेज रहे हैं तथा भगवान् श्री विश्वनाथ, परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज तथा परमाराध्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के चरणों में दिव्य जीवन संघ से समस्त भक्तों, सदस्यों तथा शुभ-चिन्तकों के कल्याण-मंगल के लिए प्रार्थना करते हैं। सद्‌गुरुदेव के चयनित आशीर्वाद सभी के ऊपर हों!

श्री स्वामी विमलानन्द जी समस्त विश्व-भर के सभी भक्तों से आशीर्वाद तथा शुभ-कामनाओं के लिए प्रार्थी और आकांक्षी हैं ताकि वह परम पूज्य गुरुदेव द्वारा स्थापित इस पावन संस्था की सेवा तथा गुरुदेव के सन्देशों का प्रसार-प्रचार कर सकें।

श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज (पूर्वाश्रम नाम श्री एस. नागराजन) ने कर्नाटक में मैसूर के निकट चामराज नगर में १९३२ में एक धर्मपरायण ब्राह्मण माता-पिता के घर जन्म लिया। १९५३ में वह परम पूज्य श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के श्रीचरणों में एक आध्यात्मिक जिज्ञासु के रूप में समर्पित हो गये। दश वर्ष तक वह निरन्तर पूज्य गुरुदेव की सेवा में रत रहे। परम पूज्य गुरुदेव की महासमाधि के उपरान्त वह परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की सेवा में उनके निजी सेवक तथा सचिव के रूप में रहे। २६ जुलाई १९७२ में परम पुनीत गुरुपूर्णिमा के शुभ दिवस पर उन्हें परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज ने संन्यास-दीक्षा दी। २८ जून २००८ को उन्हें दिव्य जीवन संघ का महासचिव बना दिया गया। तभी से वह अभी तक इसी पद पर दिव्य जीवन संघ की सेवा कर रहे थे।

स्वामी जी महाराज की सभी सम्बन्धित व्यक्तियों से प्रार्थना है कि सारी डाक (सभी पत्र, धनादेश, बैंक ड्राफ्ट, चैक, पार्सल इत्यादि) जो दिव्य जीवन संघ मुख्यालय से सम्बन्धित हों, उसे '**महासचिव, दिव्य जीवन संघ, शिवानन्दनगर २४९१९२, टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड, भारत**', इस पते पर भेजें; इसमें किसी का भी निजी नाम उल्लिखित न हो। हाँ, जो पूर्णतया व्यक्तिगत पत्र इत्यादि हों, उन पर '**श्री स्वामी विमलानन्द, अध्यक्ष, दिव्य जीवन संघ, शिवानन्दनगर २४९१९२, उत्तराखण्ड, भारत**' लिख सकते हैं।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

भारत के वीर और वीरांगनाएँ—१

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

१. इनके समान बनो

मेरे प्रिय नारायण! भीष्म अथवा हनुमान् के समान ब्रह्मचारी बनो। हरिश्चन्द्र के समान सत्यवादी बनो। कर्ण के समान उदार और अर्जुन के समान वीर बनो।

युधिष्ठिर के समान धर्मात्मा बनो। बुद्ध के समान कृपालु बनो। ध्रुव और प्रह्लाद के समान भक्त बनो। बृहस्पति के समान प्रतिभाशाली, भीम के समान पराक्रमी और श्री राम के समान कर्तव्यपरायण बनो।

नचिकेता के समान ज्ञानी बनो। ज्ञानदेव के समान योगी और शिवाजी के समान बहादुर बनो।

२. राम और कृष्ण

भगवान् श्री कृष्ण सारे विश्व के स्वामी हैं। राम और कृष्ण एक हैं। राम का जन्म अयोध्या में हुआ था और कृष्ण का मथुरा में। सीता राम की पत्नी थी और राधा कृष्ण की।

राम के हाथ में धनुष था और कृष्ण के हाथ में मुरली थी। राम ने रावण का संहार किया और कृष्ण ने कंस का नाश किया।

राम मर्यादापुरुषोत्तम हैं, कृष्ण लीलापुरुषोत्तम। राम के भाई लक्ष्मण थे और कृष्ण के भाई बलराम। सीताराम बोलो, राधेश्याम बोलो।

३. श्री हनुमान्

श्री हनुमान् पवनदेव (वायु) के पुत्र हैं। उनकी माता का नाम अंजनी देवी है। वह राम के महान् निष्ठावान् सेवक तथा दूत हैं। वह बड़े बलशाली वीर हैं। वह अखण्ड ब्रह्मचारी हैं।

उन्होंने लंका को भस्म किया। उन्होंने सीता को श्री राम की अँगूठी दी और सीता जी की चूड़ामणि ला कर श्री राम को दी। रावण-पुत्र अक्षयकुमार का उन्होंने संहार किया।

हनुमान् की तरह पराक्रमी और ब्रह्मचारी बनो। हनुमान् की पूजा करो। गाओ :

जय जय सीता राम की।
जय बोलो हनुमान् की॥

४. भीष्म

भीष्म महान् वीर थे। वह ज्ञानी भी थे। वह न्यायप्रिय, धर्मात्मा और सत्यवादी थे। वह जो कहते थे, वही करते भी थे और वह वही कहते थे जो उन्हें करना होता। वह ब्रह्मचारी थे।

उनके पिता का नाम था शान्तनु और माता का नाम गंगा देवी। अपने पिता को प्रसन्न करने के लिए उन्होंने राज्य का त्याग किया। पुत्रोचित कर्तव्य पालन करने के लिए उन्होंने महान् त्याग किया।

उन्होंने अपनी इच्छा से शरीर-त्याग किया। राजा युधिष्ठिर को उन्होंने शर-शय्या पर पड़े-पड़े धर्म का उपदेश दिया। वह सन्त-कोटि के योद्धा थे। हे नरेन्द्र, तुम भी भीष्म के समान बनो।

(अनुवादक : श्री त्रि. न. आत्रेय)

भारत के वीर और वीरांगनाएँ २

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

५. द्रौपदी

द्रौपदी पाण्डवों की पत्नी थी। कर्तव्यनिष्ठा, उदारता, सत्य, भक्ति, पातिव्रत्य, धर्मपरायणता आदि की वह साकार मूर्ति थीं। वह राजा द्रुपद की पुत्री थीं। उनके भाई का नाम धृष्टद्युम्न था।

उन्होंने भगवान् शिव से सुयोग्य पति का वरदान पाँच बार माँगा था; इसलिए भगवान् ने वर दिया कि अगले जीवन में उनके पाँच पति होंगे। एक यज्ञ की अग्नि से उनका जन्म हुआ था।

भगवान् कृष्ण ने उन्हें अनन्त वस्त्रों का दान दिया और उनकी लाज बचायी। द्रौपदी कृष्ण के प्रति अगाध श्रद्धा रखती थीं। अर्जुन ने स्वयंवर में उन्हें प्राप्त किया।

६. सीता के समान चमको

प्रिय लीला! सीता भगवान् राम की पत्नी हैं और राजा जनक की पुत्री। रामायण की वह नायिका हैं। संसार-भर में सबसे अधिक गुणवती और आदर्श महिला सीता हैं। भारतीय नारी के लिए सीता आज भी आदर्श हैं। वह लक्ष्मी देवी की अवतार हैं।

यह पवित्र थीं, उनका जीवन सादा था और राम के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा रखती थीं। वह एक आदर्श पत्नी थीं। पवित्रता और सहिष्णुता की वह मूर्त रूप थीं। वह आदर्श पतिव्रता थीं। उन्होंने अग्नि-परीक्षा दी। सीता जी के व्यक्तित्व में सौन्दर्य के साथ पवित्रता, सादगी, भक्ति और त्याग के गुण मिश्रित थे।

तुम सब सीता के समान चमको! तुम सबमें सीता के गुण आयें! सीता की कृपा तुम सब पर हो!

७. भगवान् कृष्ण और अर्जुन

भगवान् श्री कृष्ण तीनों लोकों के स्वामी हैं। वह श्री विष्णु भगवान् के पूर्ण अवतार थे। उनमें सोलहों कलाएँ थीं। अर्जुन एक पराक्रमी वीर थे। वह पाण्डु के तीसरे पुत्र थे। वह स्वर्गाधिपति इन्द्र के अंश से जन्मे थे।

वह श्री कृष्ण के निष्ठावान् शिष्य थे। श्री कृष्ण उनसे प्रेम करते थे।

महाभारत के युद्ध में श्री कृष्ण अर्जुन के सारथि बने थे। अर्जुन के भाई पाण्डवों को श्री कृष्ण ने विजय दिलायी।

रण-क्षेत्र में जब अर्जुन विषाद से ग्रस्त हुए, तब श्री कृष्ण ने उन्हें भगवद्गीता का उपदेश दिया और अपने विश्व-रूप का दर्शन कराया। अर्जुन अत्यन्त भाग्यशाली थे; क्योंकि श्री कृष्ण के श्रीमुख से वह गीता के उपदेश सुन सके। श्री कृष्ण ने अर्जुन के माध्यम से सारे संसार पर उपकार किया। अर्जुन और कृष्ण नर और नारायण थे।

८. शकुन्तला

शकुन्तला मेनका और विश्वामित्र की पुत्री थीं। कण्व ऋषि उसके पालक-पिता थे। शकुन्तला ने दुष्यन्त से विवाह किया। उसने दुष्यन्त से वचन लिया कि उसका पुत्र राजगद्दी पर बैठने का अधिकारी होगा। उनके एक पुत्र जन्मा। वह भरत के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

शकुन्तला अपने पुत्र को ले कर दुष्यन्त के दरबार में गयी और भरत को युवराज के रूप में स्वीकार करने को कहा। दुष्यन्त ने कहा कि 'मुझे कुछ याद नहीं।'

तब दुष्यन्त को आकाशवाणी सुनायी दीह्नह्न''अपने पुत्र को आश्रय दो। शकुन्तला सत्य बोल रही है।'' आकाशवाणी सुन कर दुष्यन्त ने भरत को युवराज के रूप में स्वीकार किया। भरत एक सुप्रख्यात राजा बना। उसी के नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा।

हे माधव ! अपने वचन पर हर मूल्य पर डटे रहो। सत्य की ही जय होती है, असत्य की नहीं।

९. सावित्री और सत्यवान्

सावित्री राजा अश्वपति की पुत्री थीं। वह बड़ी सुन्दर और सुशील थीं। राजा द्युमत्सेन के पुत्र सत्यवान् (जो अपने राज्य से निर्वासित कर दिये गये थे) के साथ सावित्री का विवाह हुआ।

नारद ऋषि से सावित्री को मालूम हुआ कि उसके पति एक वर्ष के अन्दर मर जाने वाले हैं। कुछ दिनों के बाद उन्हें पता चला कि आज से चार दिनों बाद पति का देहान्त होने वाला है। उन्होंने अन्तिम तीन रातों तक व्रत रखा।

सत्यवान् के साथ वह भी वन में गयीं। उसके प्राण ले जाने के लिए यम आया। लेकिन सावित्री यम के साथ लड़ती रहीं और अपने पातिव्रत्य के बल पर पति को वापस ले आयीं।

हे सुशीला! सावित्री के समान पवित्र रहो।

१०. नल और दमयन्ती

नल निषध राज्य (जिसे आजकल बरार कहते हैं) के राजा वीरसेन के पुत्र थे। वह बड़े सुन्दर और सदाचारी थे। विदर्भ के राजा भीम की पुत्री दमयन्ती से उन्होंने स्वयंवर में विवाह किया।

चौपड़ के खेल में नल ने अपना राज्य और सारी सम्पत्ति गँवा दी। केवल एक वस्त्र के साथ वह राज्य छोड़ कर चल पड़े। दमयन्ती भी उनके साथ चली।

वन में नल दमयन्ती को छोड़ कर चल दिये। दमयन्ती चेदि देश के राजा के महल में ठहरी। नल अयोध्या के राजा के अस्तबल में काम करने लगे। दमयन्ती को उसके पिता घर वापस ले आये। उसका दूसरा स्वयंवर रचा गया। नल भी आये। स्वयंवर में नल और दमयन्ती फिर मिल गये। नल ने अपना राज्य जीत लिया।

११. कर्ण

कर्ण महाभारत के एक महान् योद्धा थे। वह अपनी दानवीरता के लिए प्रसिद्ध थे। वह माँ कुन्ती के गर्भ से ही स्वर्ण-कवच और कर्ण-कुण्डल ले कर जन्मे थे। उनका जन्म दुर्वासा ऋषि द्वारा कुन्ती को दिये गये सूर्य-मन्त्र का जप करने के फलस्वरूप हुआ था।

कुन्ती ने अपने पुत्र को नदी में फेंक दिया और उसे अधिरथ नामक एक धीवर ने उठा लिया जो कि

दुर्योधन का सारथि था। कर्ण ने परशुराम से धनुर्विद्या सीखी।

कर्ण किसी प्रकार से भी अर्जुन से कम नहीं थे। अर्जुन के रथ को भूमि में धँसा कर श्री कृष्ण ने उसकी (अर्जुन की) रक्षा की, अन्यथा कर्ण अर्जुन को मार देते। कर्ण का संहार अर्जुन के हाथों हुआ।

१२. ध्रुव

एक राजा था। उसका नाम उत्तानपाद था। उसकी दो रानियाँ थीं—सुरुचि और सुनीति। सुनीति का एक पुत्र था जो बड़ा सुशील था। उसका नाम ध्रुव था। सुरुचि उससे घृणा करती थी। उसने उसे राजमहल से बाहर कर दिया। इससे बालक बहुत दुःखी हुआ। वह भगवान् की कृपा से अपने पिता के राज्य के समान दूसरा राज्य पाने की कोशिश करने लगा।

नारद ऋषि ने बालक ध्रुव को 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मन्त्र का उपदेश दिया। ध्रुव ने उस मन्त्र का जप किया। वह बड़ी निष्ठा से तपस्या करते रहे। आहार लेना भी उन्होंने छोड़ दिया। तब भगवान् वासुदेव उनके सामने प्रकट हुए। केवल स्पर्श से भगवान् ने उन्हें दिव्य ज्ञान दे दिया।

भगवान् के अनुग्रह से ध्रुव ने नक्षत्र-पदवी प्राप्त की। उन्हें शाश्वत सुख मिला, परम आनन्द की प्राप्ति हुई। नित्यप्रति 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मन्त्र का जप करो।

१३. प्रह्लाद

हिरण्यकशिपु नामक एक राक्षस था। उसने तपस्या करके ब्रह्मा जी से यह वरदान प्राप्त किया कि संसार में उसे कोई देव, दानव या मानव मार न सके। उसे ईश्वर के नाम से घृणा थी। भगवद्-भक्तों को वह बहुत कष्ट देता था और उन्हें मार डालता था।

प्रह्लाद नामक उसका एक पुत्र था। प्रह्लाद भगवान् हरि के परम भक्त थे। उन्हें हिरण्यकशिपु खूब पीटता था और हरि का नाम लेने से मना करता था। प्रह्लाद अपने पिता की बात अनसुनी करके सदा ईश्वर की महिमा गाते रहते थे। उनके पिता ने उन्हें मार डालने का बहुत बार प्रयत्न किया। लेकिन सभी विपत्तियों से भगवान् ने उन्हें बचाया। भगवान् के प्रति हिरण्यकशिपु की घृणा अपनी आखिरी सीमा तक पहुँच गयी। अन्त में भगवान् नरसिंह का अवतार ले कर आये। उन्होंने हिरण्यकशिपु का संहार किया और प्रह्लाद की रक्षा की।

तुम भी प्रह्लाद के समान बनो।

१४. शिवि

शिवि सूर्यवंशी राजा थे। काशी उनकी राजधानी थी। वह दान के लिए विख्यात थे। एक बाज से डर कर एक कबूतर उनकी शरण में आया। शिवि ने उसे उसके प्राणों की रक्षा का वचन दिया।

बाज की भूख मिटाने के लिए शिवि कबूतर के बदले अपने शरीर का मांस काट कर देने लगे। जब उनका सारा शरीर कट गया, तब बाज और कबूतर—दोनों अपने असली रूप में (देवताओं के रूप में) प्रकट हुए और उन्हें कई वर दिये। वह स्वर्ण के विमान पर चढ़ कर स्वर्ग गये।

करुणा से बढ़ कर दूसरा कोई गुण नहीं है। काशिराज शिवि ने स्वर्ग और अमर यश प्राप्त किया। हे प्रिय शिवराम! दुर्बलों की रक्षा करो।

१५. शबरी

शबरी जंगलों में रहने वाली भील जनजाति की महिला थीं। वह श्री राम की भक्त थीं। वह बहुत धर्मनिष्ठ थीं। अपने वनवास के समय श्री रामचन्द्र शबरी के आश्रम में पधारे थे। शबरी ने राम को अर्घ्य प्रदान किया और कुछ फल भी खिलाये, जिन्हें उन्होंने पहले खुद चख कर देखा कि वे मीठे हैं या नहीं। चूँकि शबरी ने उन फलों को बड़ी भक्ति के साथ अर्पित किया था, इसलिए राम ने जूठे होने पर भी उन्हें बड़े स्वाद के साथ खाया।

वस्तुत: प्रेममय हृदय ही मुख्य वस्तु है। ईश्वर बहुमूल्य भोग नहीं चाहता। जो सच्चा भक्त भगवान् के चरणों में अपने को पूर्णतया समर्पित कर देता है, भगवान् उसके दास बन जाते हैं।

१६. अम्बरीष

एक सूर्यवंशी राजा थे। उनका नाम अम्बरीष था। वह भगवान् वासुदेव के बड़े भक्त थे। वह एकादशी का व्रत रखते थे। एक बार द्वादशी के दिन उन्होंने भगवान् की पूजा की और ब्राह्मणों को भोज दिया। वह भी आहार ग्रहण करने वाले थे, इतने में ऋषि दुर्वासा आये। राजा ने उनका स्वागत किया। ऋषि स्नान के लिए नदी पर गये। बहुत देर तक लौटे नहीं। राजा ऋषि से पहले भोजन नहीं कर सकते थे, इसलिए पारण करने के लिए केवल पानी पी लिया।

दुर्वासा स्नान करके आये। राजा ने पानी पी लिया था, इससे वे बड़े क्रुद्ध हुए। अम्बरीष का संहार करने के लिए उन्होंने एक राक्षस की सृष्टि की। लेकिन भगवान् ने उनकी रक्षा के लिए अपना चक्र भेज दिया। उस चक्र ने राक्षस का संहार कर दिया और दुर्वासा पर भी आक्रमण करने लगा। ऋषि भय से भागने लगे। वह वासुदेव की शरण गये। प्रभु ने कहाव्व''मैं कुछ नहीं कर सकता, अम्बरीष की ही शरण में जाओ।'' तब अम्बरीष ने भगवान् की स्तुति की और चक्र को शान्त किया। इस प्रकार अम्बरीष ने ऋषि की रक्षा की।

प्यारे बच्चो! अपनी सत्ता या सम्पत्ति का घमण्ड न करो। घमण्ड पतन की ओर ले जाता है।

१७. राजा विक्रमादित्य

श्री रामचन्द्र के बाद राजा विक्रमादित्य ही भारत के सबसे महान् पराक्रमी और महान् राजा हुए। वीरता में वह सूर्य के समान थे। उनका शासन बहुत दयामय तथा सद्भावपूर्ण था। उनका शासन-काल भारत में स्वर्णयुग माना जाता है। उनके दरबार में नौ रत्न थे। उन रत्नों में कालिदास भी एक थे। उन्होंने संस्कृत-साहित्य का पुनरुत्थान किया। समूचे भारत पर उनका आधिपत्य था।

उनके शासन-काल में सर्वत्र शान्ति, प्राचुर्य और समृद्धि थी। लोग घरों में ताला नहीं लगाते थे। कहीं भी चोरी का नाम नहीं था। सारी प्रजा प्रसन्न थी। राजा बड़े भक्त और धर्म-प्रेमी थे। वह चौंसठ कलाओं में निपुण थे। अष्ट-सिद्धियाँ और नव-निधियाँ उनके अधीन थीं।

उनका सिंहासन बत्तीस सिंहों के ऊपर स्थित था। वह बड़े न्यायी, धर्मात्मा और दयालु थे। चीन देश के एक यात्री फाहियान ने उनके शासन के विषय में लिखा है। उनके राज्य-काल में सारे देश में शिक्षा और संस्कृति का खूब विकास हुआ था। सचमुच में वह राजवैभव की पराकाष्ठा तक पहुँच गये थे।

१८. हरिश्चन्द्र

हरिश्चन्द्र वाराणसी के राजा थे। वह सदा सत्य बोलते थे। उनका नाम सत्य का पर्याय हो गया था। उन्होंने बड़े न्याय और कुशलता से राज्य किया।

विश्वामित्र ऋषि ने कई प्रकार से उनकी परीक्षा की। हरिश्चन्द्र को राज्य से बाहर भेज दिया गया। उन्हें उनकी रानी से अलग कर दिया गया। उनका पुत्र साँप के काटने से मर गया। उन्हें अपने पुत्र का दाह-संस्कार स्वयं करना पड़ा। विश्वामित्र ने उन्हें असत्य बोलने के लिए विवश करने का पूरा प्रयत्न किया, पर वह कभी असत्य नहीं बोले।

भगवान् शिव उनकी सत्यनिष्ठा से प्रसन्न हुए। उनका मृत पुत्र फिर जी उठा। भगवान् शिव ने कहा—"हरिश्चन्द्र, तुम मेरे सच्चे भक्त हो। मैं तुम पर प्रसन्न हूँ। पूरे जीवन में तुम एक भी असत्य नहीं बोले। मैं तुम्हें तुम्हारा सारा राज्य, धन और सम्पत्ति लौटा देता हूँ। पत्नी-पुत्र सहित अपने महलों को लौट जाओ। सुख से रहो। तुम्हारा नाम संसार में हमेशा प्रसिद्ध रहेगा। तुम्हें लोग सत्यवादी के रूप में स्मरण करेंगे। तुम्हें सुख मिले!"

ऊँचा ध्येय रखो। हरिश्चन्द्र के समान बनो। मृत्यु का भय उपस्थित होने पर भी असत्य न बोलो। जीवन सादा रखो। विचार उच्च रखो। तुम्हें सभी प्रकार का वैभव और सफलता मिलेंगे!